Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- मार्च २०१९
अङ्क -११ (१९२)
वर्ष -१३ (१८)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं
प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

❖ **सम्पादकीय :** **पल्लव**
- श्रावक का दृष्टिकोण : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- सुख शांति पैसों से ...: श्री विरागसागर महाराज ६
- शंकाओं के आगमिक ... : प.पू.श्री विरागसागर ९
- श्री, श्रीमान और जी : संस्कार सुरभि से १०
- तोता नहीं, स्तोता बनो : आ. विशुद्धसागर जी ११
- ज्ञान से न जले तो अज्ञान... : आ.विनम्रसागरजी १२
- एकत्व भावना से मन...:आ.श्री विमर्शसागर १२
- भय का कारण मायाचारी : आर्यि.विदूषीश्री माता १३
- पुरुषार्थ की कीमत : आर्यि. विसुव्रताश्री माताजी १३
- गुरु पूजन : आर्यि.वियुक्तश्री माताजी १४
- भोजन में काल शुद्धि : आर्यि. विसंयोजनाश्री १८
- सरल सहज है, उपकारी गुरु...: रवि चुनगी १९
- जन परमात्मा की शरण में जाति-पाति व अमीर-गरीब का कोई...: महेन्द्र कुमार जैन २०
- पद्म प्रभु मोहन कूट :आ.विबोधश्री माताजी २१
- निष्ठा-समर्पण : सामायोजित शिक्षाएँ से साभार २२
- मेरी दृष्टि में : ब्र. राजकुमार जैन ३२
- आध्यात्मिक शंका-समाधान :श्री विरागसागर जी ३४
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन ३६

❖ **कविताएँ**
- सब भक्तों को नाज है : आर्यि.वियुक्तश्री माता जी ११
- युग की पीड़ा : आ. श्री विशुद्धसागर जी २२
- गुरुवर विराग सागर : कांति कुमार जैन 'करुण' २२
- विरागसागर नाम हमें अब... पं. बृजेन्द्र कुमार २७
- राष्ट्र-भावना : गणा. श्री विरागसारग जी महाराज ३९

❖ **स्वास्थ्य जगत**- जाने छाला एवं उनके उपचार २८
❖ **समाचार** ४०
❖ **विराग वर्ग पहेली** ४५

संपादकीय

श्रावक का दृष्टिकोण

इंजी. आनन्द कुमार जैन

जैन इतिहास में महान् आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी जी जो एक बहुत तपस्वी आचार्य थे, जिन्होंने जैन वाङ्मय का बड़ा गहरा चिन्तन मन्थन किया है। उसके उपरान्त उन्होंने समयसार जैसे महान ग्रन्थों की व ८४ पाहुड़ों की रचना की फिर सिद्धान्त पर उन्होंने अपनी लेखनी चलायी। संसार वही है जिसके बारे में सभी वक्ता और नीतिकार कहते हैं, संसार में न कुछ बुरा है न कुछ अच्छा है, संसार में जो था, वो है और रहेगा। संसार में चार गति के जीव परिभ्रमण करते हैं, और करते रहेंगे। संसार में मूलरूप से दो ही द्रव्य है जीव और अजीव। अजीव के ५ भेद है, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। जीव के दो भेद हैं- संसारी जीव और मुक्त जीव। संसारी जीव पांच इन्द्रिय की अपेक्षा से पाँच प्रकार के माने जाते हैं तो मुक्ति जीव कर्मों से रहित होने की अपेक्षा से एक ही प्रकार के माने जाते हैं। संसार में दृश्य को देखने वाले दृष्टा भी हैं, उन दृष्टाओं के पास दृष्टि भी है। दृश्य भी अनंत हैं, दृष्टा भी अनन्त हैं। जब दृष्टा अनंत हैं तो उनकी दृष्टियाँ भी अनंत हैं। या यूँ कहें कि एक-एक दृष्य को देखने के लिये भी अनंत दृष्टियों की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि एक-एक दृश्यमान वस्तु अनेक धर्मों से, स्वभावों से, गुणों से अनुरंजित होती है। संसार में पदार्थ सीमातीत है तो दृष्टि भी सीमातीत होना चाहिये। दृष्टि कभी विकृत होती है, कभी प्रकृत होती है तो कभी सुकृत होती है, जब दृष्टि में विकार आ जाता है अर्थात् पदार्थ ज्यो का त्यो न दिखकर विकार मय दिखता है तो समझ लो दृष्टि विकृत होती है। जब पदार्थ उसे कुछ अच्छा लगता है जिसके प्रति राग जागृत होता है तो उसके प्रति दृष्टि वैसी हो जाती है। जब पदार्थ ज्यों का त्यों दिखाई देता है अर्थात् दृष्टि में न राग होता है न द्वेष होता है। वंद दृष्टि दृष्यों के प्रति विद्वेष का प्रतीक है। वीतरागी की दृष्टि प्रकृत होती है, उनकी दृष्टि नासा के अग्रभाग पर रहती है क्योंकि उन्होंने राग द्वेष को नष्ट कर दिया है। यदि राग द्वेष को नष्ट नहीं किया जायेगा तो दृष्टि या तो पूरी वंद रहेगी या पूरी खुली रहेगी। राग द्वेष के नष्ट होने पर ही नासाग्र दृष्टि हो सकती है यह वीतरागी का लक्षण है।

परम पूज्य १०८ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मुनियों के बारे में बताया कि कितनी भी ठण्डी या गर्मी हो आपके पास सहनशीलता के अलावा कोई उपाय नहीं हैं। किसी भी प्रकार के गद्दा, चादर, कंबल इत्यादि का प्रयोग नहीं कर सकते हैं। ठण्डी सहन ही करना पड़ेगी, मात्र तृणासन पर ही बैठ सकते हैं। गर्मी के मौसम में स्नान नहीं कर सकते हैं। धूप भी लगेगी लू भी लगेगी तो भी सहन करना ही होगा। हर परिस्थिति में हित मित प्रिय भाषा ही अपना आभूषण होगा। आहार चर्या में इशारा संकेत कुछ नहीं चलेगा शुद्ध प्रासुक, मर्यादित जो भी सामग्री प्राप्त होगी। ४६ दोषों को टालकर प्रसन्नता पूर्वक उसे अंगीकार करेंगे। कोई भी सामग्री रखते उठाते समय उठना बैठना चटाई आदि बिछाना देख शोध कर मार्जन पूर्वक करना होगा। साथ ही श्रमण चर्या में प्रतिष्ठापन समिति का पालन करना भी अनिवार्य होता है। अर्थात् जीव जन्तु रहित प्रासुक प्रदेश में मल, मूत्र और क्षेपण करना। आज का व्यक्ति इन्द्रियों का दास बन रहा हे। किसी को गरमा गरम पसंद होता है तो किसी को फ्रीज का ठण्डा चलता है। जबकि ये दोनों ही बातें असक्ति का प्रतीक हैं। कई साधु दीक्षा के बाद भी खाने पीने के तौलुपी रहते हैं। जबकि दीक्षा का अर्थ ही है इच्छा का विर्सजन।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार १.११.१९८२)

।। ऊँ ह्रीं णमो अरहंताणं।।

हे आत्मन्! संसारी भव्य गण ही संसारार्णव से पार होने के लिए वीतराग निर्ग्रन्थ सर्वज्ञ हितोपदेश देव प्रथामानुयोग करणानुयोग द्रव्यानुयोग चरणानुयोग सिद्धान्तशास्त्र आचार्य उपाध्याय साधु निर्ग्रंथ गुरु की मंगलकामना के लिए भक्ति स्तुति वंदना प्रणाम पूजन तथा उनके गुण आनंद दायकों का बार-बार चिन्तन मनन करता हुआ पुण्य संपादन करे जिससे भावों में विशुद्धि और श्रद्धा के संस्कार की वृद्धि हो तथा उनके गुण जानकर संसार शरीर भोगों से वैराग्यवान होकर परमशान्ति के कारण वृत संयम धारण करे अपनी भावना में भेद विज्ञान में द्रढ बने ऐसी मंगलमय कार्य हरक्षण उत्पन्न हो जिससे यथा क्रम से शुभोपयोग सिद्धि हो और खदान के समान ध्यानाध्यन की वृद्धि हो और जामन मरण का क्षय हो यही भावना जाग्रत करने के लिए है विमलात्मन तुम तो अपनी भावना को स्वाध्याय ध्यान के माध्यम से आनंद धन निजानंद परमानंद सहजानंद बने और अपा प्रकाश अपने में निमग्न रहे।

जिनोपदेश

संकलन- समाधिस्थ श्रमणमुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

गुरु भक्तो भवाद्भीतो, विनीतो धार्मिकः सुधीः।
शान्तस्वान्तो ह्यतन्द्रालुः शिष्टः शिष्योऽमिष्यते।। क्ष.चू.२/३१।।

अर्थ- जो गुरुभक्त संसार भीत, विनयी, धर्मात्मा कुशाग्रबुद्धि, शान्तिपरिणामी, आलस्यहीन और सभ्य होता है, वही शिष्य वास्तविक शिष्य कहलाता है।

कोऽनन्धो लंघयेद्गुरुम।। क्ष. चू २/३९।।

अर्थ- कौन ज्ञानवान् गुरु को अपमानित करेगा अर्थात् कोई नहीं करेगा।

न हि प्राणवियोगडिप प्राज्ञै-र्लङ्घ्यं गुरोर्वचः। क्ष.चू. ५/१३।।

अर्थ- बुद्धिमानों के द्वारा जान निकलने का अवसर आने पर भी गुरु की आज्ञा लंघनीय नहीं होती।

प्रश्रयेण बथूबुस्ते, प्रत्यक्षाचार्यरूपकाः।
विनयः खलु विद्यानां, दोग्ध्री सुरभिरञ्जसा।। क्ष.चू. ७/७७।।

अर्थ- वे राजकुमार गुरु की विनय और सेवा सुश्रुषा से साक्षात् गुरु के समान हो गये। क्योंकि गुरु की यथार्थ विनय विद्याओं की देने वाली कामधेनु के समान होती है।

तस्य प्रश्रयसुश्रुषा चातुर्याद् गुरुगोचरात्।
स्मृता इवाभवन्विद्या, गुरु स्नेहो हि कामसूः।। क्ष.चू. २/२।।

अर्थ- गुरु की विनय और सेवासुश्रुषा की चतुराई से विद्याएँ स्मरण की हुई के समान प्राप्त हो जाती हैं। क्योंकि गुरु को प्रेम इच्छाओं को पूर्ण करने वाला होता है।

गुरुदेव हि देवता।। क्ष.चू. १/१११ गुरु ही देवता हैं।

सुख-शांति पैसों से नहीं...

(प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज)

बन्धुओ! आज हम सब भारत देश में निवास कर रहे हैं इस बात का हमारे लिये गर्व है जिस देश की धरती को हमारे ऋषि-मुनियों ने महापुरुषों ने समय-समय पर सींचा है और उर्वरा बनाया है। उन्होंने हमें एक साथ बैठने, रहने और आपस में बातों को आदान-प्रदान करने के अच्छे संस्कार दिये हैं। मात्र कहा ही नहीं स्वयं उस रास्ते पर चलकर बताया है।

जब कोई व्यक्ति केवल चर्चा करता है चर्या में शून्य होता है तो उसकी वह बात गले नहीं उतरती है उसका खाश असर नहीं पड़ता है लेकिन जब किसी बात के लिस प्रवक्ता स्वयं आचरण में ढ़ालता है इसके बाद दूसरों को बतलाता है तो उसका असर प्रभाव पड़ता है। यही कारण रहा कि उनके द्वारा दिये गये संस्कार आज तक हमारे नागरिकों के अंदर कायम रहे इसीलिए हमारा देश एक सुख-शांति प्रिय देश माना जाता है।

हमारे देश को संपूर्ण विश्व ने गौरव प्रदान किया। आज तक विश्व में जितने भी देश है किसी भी देश को माता का गौरव नहीं मिला लेकिन हमारा भारत देश एक ऐसा देश है जिसे भारत माता के रूप में सम्मानित किया गया है।

भारत देश सोने की चिड़ियाँ के नाम से जाना जाता था क्योंकि हमारे देश में अन्य देशों की अपेक्षा अधिक स्वर्ण भण्डार थे। १९५० में जब आर्थिक दृष्टि से हमारे देश को देखा गया तो विश्व के २५० देशों में लगभग ११२ वे नम्बर पर हमारा भारत देश था लेकिन आज २०१८ में हमारा देश आर्थिक आंकलन में १५वें नम्बर पर आ चुका है अर्थात् इतनी आर्थिक प्रगति हुई है।

भारत देश में अब कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं है। यहाँ का भिखारी भी क्यों न हो, उसके पास भी मोबाइल, झोपड़ी में टी.वी. रहती है। जिससे स्पष्ट होता कि गरीबी नहीं रही। आज अन्य शिक्षा शक्ति आदि विकाश की अपेक्षा भी हमारा देश पांचवे से चौथे नम्बर तक आ चुका है। आज हमारा भारत देश सम्पन्न, शिक्षाशील एवं शक्तिशाली देशों के नाम से जाना जाता है।

बन्धुओ! शक्ति, शिक्षा एवं आर्थिकता का विकाश तो हमारे देश में हुआ लेकिन सबसे बड़ी कमी यह रही कि पुराने समय की अपेक्षा वर्तमान में हमारे देश में सुख-शांति का प्रतिशत घट गया। पहले मेहनत करने पर भी व्यक्ति स्वस्थ रहता था। आज अनेकों ऐसी मशीनों के आविष्कार हुए हैं जिससे व्यक्ति को मेहनत नहीं करनी पड़ती बड़े से बड़े तथा लम्बे समय में हो पाने वाले कार्य भी आज थोड़ ही समय में आसानी (बिना परिश्रम) से हो जाते हैं लेकिन फिर भी व्यक्ति स्वस्थ नहीं रह पाता है। पहले जिन बीमारियों के नाम भी किसी ने नहीं सुने थे वे बीमारियाँ लोगों में फैल रहीं हैं। हमारे देश में अशांति का प्रतिशत बढ़ गया है। लोग कहते हैं पैसा ही सब कुछ है, पैसा ही शांति है लेकिन ध्यान रखिये ये केवल एक भ्रम और भ्रांति है। मान सकते हैं पैसा कुछ है लेकिन सब कुछ नहीं है। पैसा से आप मकान खरीद सकते हो, दुकान खरीद सकते हो, सोना-चांदी के आभूषण खरीद सकते हो, कीमती वस्त्र खरीद सकते हो लेकिन पैसों से शांति नहीं खरीदी जा सकती।

आज प्रतिदिन ५०० रुपये कमाने वाला व्यक्ति भगवान से प्रार्थना करता है हे भगवन्! मुझे दिन के १००० रूपये कब मिले और दूसरी ओर १ लाख रुपये कमाने वाला भी भगवान से प्रार्थना करता है कि १ लाख के २ लाख कब हो जाये। प्रार्थना दोनों की एक समान है जिससे लगता है कि दु:ख का लेवल बराबर है दोनों में से एक भी शांति में नहीं है इसलिए पैसों से शांति नहीं मिलती यह सत्य और स्पष्ट नजर आता है।

भगवान महावीर स्वामी और जो भी महापुरुष हुए उन्होंने कहा- शांति और सुख की प्राप्ति पैसों से नहीं वह तो हमारे आचरण और नैतिकता से होती है। ध्यान रखिये एक गरीब से गरीब परिवार भी क्यों न हो यदि उसमें नैतिकता है तो वे अपना जीवन हर्ष खुशी से व्यतीत करते हैं लेकिन नैतिकता के अभाव में बड़े से बड़े परिवार भी दुख और अशांति में देखे जाते हैं। आपसी मन मिटाव, तनाव के कारण उन्हें नींद की दवा लेने पर भी नींद नहीं आती है ओर वे तरह तरह की समस्याओं से उलझते जाते हैं तब लगता है कि शांति और सुख भरा गरीब परिवार अच्छा है लेकिन शांति से रिक्त अमीर

परिवार भी अच्छा नहीं है। कोई व्यक्ति प्रेम के साथ रुखा भोजन भी खिलाता है तो उसमें जो आनंद आता है वह आनंद असम्मान और अनादर के हलवा-पूड़ी में नहीं आता है।

कहने का तात्पर्य है हमारे जीवन में नैतिकता का विकाश होना चाहिए। प्राचीन समय में सबसे पहले नैतिकता की शिक्षा दी जाती थी उसके बाद आजीविका की शिक्षा दी जाती थी लेकिन आज पन्ना बिल्कुल पलटा हुआ है लौकिक आजीविका की शिक्षा पहले है नैतिकता बाद में अथवा है ही नहीं। प्राचीन समय में जब किसी बच्चे से उसके माता-पिता गुरु आदि का नाम पूछा जाता था तो वे बड़े सम्मान के साथ पूज्य, परम पूज्य, आदरणीय, पूज्यनीय, श्री, श्रीमान आदि शब्दों का प्रयोग करते थे लेकिन आज के बच्चों से जब हम उनके माता-पिता आदि का नाम पूछते हैं तो वे सीधा कहते हैं मेरे पिता का नाम 'अरुण' है। आदरणीय, पूज्यनीय शब्द तो आज लुप्त से हो चुके हैं और यही कारण है कि बच्चों में पूज्यों के प्रति आदर सम्मान की भावनाओं में भी अंतर आ गया है। मैं चाहता हूँ हमारे पाठ्यक्रम में कुछ नैतिकता और कर्त्तव्यों के पाठ भी पढ़ाये जायें जीवन जीने की वास्तविक शैली हो। पशु और पक्षियों की तरह नहीं एक श्रेष्ठ मानव की तरह जीवन जीने की कला सिखाई जाये।

किसी वैज्ञानिक ने अपने विचारों में लिखा कि मनुष्य सभी प्राणियों से निराला है। उसके अंदर सोचने-विचारने की क्षमता होती है वह हर कार्य सोच-विचार कर करता है जिससे उसे नयी-नयी उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं।

जब हम लोग कोटा गये तो वहाँ लगभग २५००० बच्चों के बीच में प्रवचन हुआ था। उस समय एक बच्चे ने पूछा- कि शांति को प्राप्त करने का क्या तरीका है ? क्या शांति शिक्षा से मिलती है ? मैंने कहा- नहीं, शांति मात्र शिक्षा से नहीं, अपितु शिक्षापूर्ण संस्कारों से मिलती है। हमारे अंदर शिक्षापूर्ण संस्कार होना चाहिए।

बन्धुओं पाण्डव जब अपने गुरुकुल में अध्ययन करते थे तो उनके गुरु ने एक दिन उन्हें एक पाठ दिया 'सत्यंवद, युक्तंचर' छोटा सा पाठ था सभी छात्रों ने जल्दी ही याद करके सुना दिया लेकिन युधिष्ठर को पाठ याद नहीं हुआ। गुरु ने उन्हें खड़ा किया वे संस्कारवान छात्र थे। अत: दृष्टि नीची करके गुरु के समक्ष खड़े हुए गुरु ने पूछा- तो युधिष्ठर कुछ न बोले। गुरु ने कहा- युधिष्ठर क्या तुम्हारा स्वास्थ ठीक नहीं है ? युधिष्ठर ने कहा- गुरुदेव अपने गुरुकुल की दिनचर्या इतनी इच्छी है कि यहाँ तो बीमारी का प्रवेश ही नहीं हो सकता। गुरु ने कहा- तो क्या तुम्हारा किसी से विवाद हो गया है ? युधिष्ठर ने कहा-आपने इतने अच्छे संस्कार दिये है कि हम लोगों में भाईचारे का व्यवहार है झगड़ा तो हम लोगों में कभी होता ही नहीं है। गुरु ने कहा- तो क्या तुम्हें अपने माता-पिता की याद आ रही है ? युधिष्ठर ने कहा- गुरुदेव आपके स्नेह के सामने हमें माता-पिता की याद कैसे आ सकती हैं। गुरु ने कहा- तुम तो गुरुकुल के सबसे अच्छे याद करने वाले छात्र हो, फिर तुम्हें छोटा सा पाठ याद क्यों नहीं हुआ। युधिष्ठर गुरु के चरणों में गिर गये और बोले- गुरुदेव! जैसा पाठ सभी ने सुनाया है वैसा पाठ तो मुझे उसी समय याद हो गया था लेकिन आचरण में नहीं आया था अभी तक मैं सदैव सत्य नहीं बोलता था और उत्तम आचरण भी नहीं था, लेकिन आज से मैं नियम लेता हूँ कि सदैव सत्य बोलूँगा और उत्तम आचरण करूँगा। गुरु ने युधिष्ठर को अपने हृदय से लगा लिया था। उसी समय से युधिष्ठर की ख्याति सत्यवादी युधिष्ठर के नाम से हुई थी।

बन्धुओ! हमने भारत देश में जन्म लिया है तो हम देश के लिए कुछ ऐसा कार्य करें जिसे देश सदैव याद रखे। आज हमारी पहचान माता-पिता और जाति, गोत्रों से हो रही है लेकिन हम एक ऐसे आदर्शवान बने कि हमसे नगर, प्रांत, और देश की पहचान बन जायें।

विगत २५ वर्षों से निरन्तर चलने वाले अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ एवं स्वच्छता अभियान से अभी तक लगभग २८ लाख विभिन्न समाज के नागरिक संकल्पवद्ध हुए हैं। मैं चाहता हूँ आप सभी भी इसे अपने जीवन में अपनायें।

बन्धुओ! जैसे हमे कोई सुई चुभाये, कष्ट दे तो हमें पीड़ा होती है वैसे ही अन्य प्राणियों को भी पीड़ा होती है। अगर कोई अपने परिवार के सदस्य के ऊपर प्रहार करे तो अपने लिए और सारे परिवार के लिए कष्ट होता है वैसे ही पशु हो

अथवा पक्षी सभी का अपना परिवार होता है। उनमें से किसी एक को मारने पर उन सभी को कष्ट दु:ख होता है। ये बात अलग है कि आपके डर और भय के कारण वे प्रतिकार नहीं कर पाते लेकिन अंतर आत्मा के दुख को तो वे ही जानते हैं। इसलिए उनकी पीड़ा को समझते हुए हम उन्हें कभी न मारे। हाथ पर यदि मच्छर बैठ जाए तो उसे हाथ पटक कर मारे न उसे उड़ा दें ताकि उसके प्राणों की रक्षा हो सके। जानकर बिना कसूर के किसी भी प्राणी को न मारें, सभी प्राणियों की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

अपने देश के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जब अमेरिका के फेशबुक ऑफिस में पहुँचे तो उनके ऑटोग्राफ्स मांगे गये जिसमें उन्होंने लिखा 'अहिंसा परमो धर्म:' राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी जब वैरिस्टरी पढ़ने गये तो वहाँ डॉक्टर ने उनसे कहा- आपकी बीमारी मांस खाने पर ही ठीक हो सकती है अन्यथा नहीं। उस वक्त महात्मागांधी जी ने कहा था मुझे मरना पसंद है लेकिन मांस, अण्डे खाना पसंद नहीं है। हम भी तो उन्हीं के देश के नागरिक हैं अत: हमारा भी कर्तव्य है कि हम कभी मांस, अण्डे का भक्षण न करें अपने पेट को कब्रस्थान न बनायें। प्रकृति ने हमारे खाने के लिए कई प्रकार के अनाज, फल, सब्जियाँ दी हैं फिर हम मांस क्यों खायें?

व्यसन जीवन को वर्बाद कर देते हैं शराब पीने से व्यक्ति का न केवल स्वयं का जीवन अपितु संपूर्ण परिवार ही तहस-नहस हो जाता है। जब व्यक्ति शराब के नशे में धूत हो जाता है तब उसके जीवन में आय के संपूर्ण स्रोत बंद हो जाते हैं जिसकी कमी से बच्चे अच्छी तरह से पढ़ लिख नहीं पातें, कभी-कभी तो पेटभर भोजन भी कठिन हो जाता है। रोग-बीमारी होने पर इलाज के पैसे भी उनके पास नहीं रहते जिससे जीवन भी दुख दायक हो जाता है। तथा कैंसर जैसे बड़े-बड़े असाध्य रोग भी शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा आदि व्यसनों के सेवन से हो जाते हैं अत: आप सभी व्यसनों से सदैव दूर ही रहें कभी उनका सेवन न करें।

जिन शासन में वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभनाथ ने अपनी दोनों पुत्री ब्राह्मी-सुंदरी को अपनी गोद में बिठाकर वर्णविद्या एवं अंकविद्या प्रदान की उसी समय से उन्होंने बेटियों को योग्य संरक्षण दिया था। बेटी को बचाया भी था और बेटी को पढ़ाया भी था। इसी बात को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दुहराया एवं जन-जन तक पहुंचाया ताकि सारे देश में भ्रूणहत्या बंद हो सके। मात्रक बेटी को ही नहीं बेटों को भी बचाओं और उन्हें पढ़ाओं तथा संस्कारवान बनाओ।

पांचवा सूत्र है स्वच्छता क्योंकि स्वच्छता में ही परमात्मा का बास होता है जहाँ स्वच्छता होती है वहाँ व्यक्ति बैठना उठना पसंद करता है। कुत्ता भी अपनी पूंछ से स्थान को साफ करके बैठता है फिर हम तो मनुष्य हैं अत: हम अपने घर मोहल्ला नगर में स्वच्छता रखें। आप सभी इन पांचों सूत्रों को अपने जीवन में धारण कर जीवन को हर्ष आनंद एवं सुख शांतिमय बना सकते हैं।

(सभी ने पूज्य गुरुदेव द्वारा दिये गये नियमों को हाथ ऊपर कर स्वीकृत किया)

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

शंकाओं के आगमिक समाधान

समाधान कर्ता- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

शंका-प्रतिक्रमण की परम्परा क्या शाश्वत है तीर्थंकरों के काल में सभी को करना होता है अथवा नहीं ?

समाधान- प्रतिक्रमण के विषय में पहली बात तो यह है कि प्रतिक्रमण की परम्परा शाश्वत है अशाश्वत नहीं। लेकिन तीर्थंकरों के काल में कैसा प्रतिक्रमण होता है इसका उल्लेख शास्त्रों में हैं। भगवान ऋषभदेव के शासन काल के शिष्य इतने सरल परिणामी थे कि जिसने जैसा कह दिया वैसा मान लेते थे जिससे वे अपने कर्तव्य को भी भूल जाते थे इसलिए उन्हें पूरा प्रतिक्रमण करना अनिवार्य होता था। दूसरे भगवान महावीर स्वामी के काल में रहने वाले शिष्य वक्र परिणामी थे अर्थात् कठोर टेड़े मेड़े परिणाम अभिमानी किस्म के होने से अधिक दोष होते हैं इसलिए उन्हें भी पूरा प्रतिक्रमण करने की आज्ञा है शेष २ से २३ तीर्थंकरों के शिष्य मध्यम परिणामी होते हैं न वक्र न सरल इसलिए उनसे अधिक दोष नहीं होते उन्हें जितने दोष लगते हैं वे उतना ही प्रतिक्रमण करते हैं ऐसा उल्लेख आगम ग्रंथों तथा मेरे द्वारा लिखा लेख 'युग प्रतिक्रमण' में देख लेना चाहिए।

शंका- क्या साधु परमेष्ठी ही श्रमण कहलाते हैं ?

समाधान- हाँ, यह सिद्धान्त है कि जो साधु परमेष्ठी अर्थात् आचार्य, उपाध्याय और साधु 'श्रमण' कहे जाते हैं क्योंकि ये रत्नत्रय का श्रम करते हैं मोक्ष की प्राप्ति के लिए परिश्रम करते हैं इसलिए 'श्रमण' हैं और श्रमण दिगम्बर जैन मुनि को कहा जाता है ऐसा कोश में प्राचीन ग्रंथों का प्रमाण है। तत्वार्थसूत्र के दूसरे अध्याय में श्रुत मनेन्द्रियस्थ सूत्र है जिस का अर्थ है श्रुतज्ञान मन से होता है तो एक से असंज्ञी पंचेन्द्रिय को बिना मन के कैसे होता है ?

पहली बात आपने अर्थ गलत कर लिया है। वहाँ इन्द्रियों के विषय का व्याख्यान चल रहा है इसलिए सूत्र का अर्थ है श्रुतज्ञान मन का विषय है। जिन-जिन जीवों को मन पाया जाता है उनके लिए श्रुतज्ञान मन का विषय करता है ओर जिनके लिए मन नहीं पाया जाता है उनमें जो भी इन्द्रियाँ पाई जाती है तद्-तद् इन्द्रियाँ उनके श्रुतज्ञान का विषय बनती हैं। ऐसा सर्वार्थसिद्धि की टीका में उल्लेखित है। मति ज्ञान श्रुतज्ञान एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीवों को पाया जाता है इसलिए जहाँ मन है वहाँ मन को विषय करता है तथा जहाँ मात्र एक-दो आदि इन्द्रियाँ पाई जाती हैं वहाँ उसी रूप मतिज्ञान एवं श्रुतज्ञान पाया जाता है। श्रुतज्ञान की एक और विशेषता है उसे परार्थज्ञान भी कहते हैं अर्थात् श्रुतज्ञान केवल मतिज्ञान पूर्वक ही नहीं श्रुतज्ञान श्रुतज्ञान पूर्वक भी होता है ऐसा जानना चाहिए।

शंका- अतिचार, अनाचार, अतिक्रम, व्यतिक्रम किसे कहते हैं ?

समाधान- जिन्होंने संस्कृत सामायिक पाठ पढ़ा होगा उन्हें मालूम है वहाँ कहा है-

क्षति मनः शुद्धि विद्येरतिक्रमं, व्यतिक्रमं शीलव्रते विलंधनम्।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं, वदन्त्यनाचार मिहाति सक्ताम्।।५।।

मन की शुद्धि का अभाव अतिक्रम है। जब-जब भी हमारा धर्म के विपरीत उपयोग जाता है तो विशुद्धि की खति होती है। कषाय जन्य परिणति जब-जब होगी तब-तब संक्लेशता बढ़ती है और विशुद्धि का अभाव होता है और जब कषाय संक्लेशता घटती हैं वैसे-वैसे विशुद्धि बढ़ती है यह विशुद्धि घटना अतिक्रम है। दूसरा व्यतिक्रम शील व्रत, नियम, सयम के प्रति डर भय समाप्त होकर उनकी मर्यादा तोड़ना व्यतिक्रमम है। तीसरा अतिचार एक देश व्रतों का खण्डन होना अतिचार और पूर्णरुपेण विषयों में लीन होना अनाचार है। जैसे किसी गाय के मन में भाव आये मुझे घास खाना है यह अतिक्रम उसने खेत की बाड़ तोड़ दी व्यतिक्रम अंदर घुस गई अतिचार और घास खाना प्रारंभ करना अनाचार। यह उदाहरण है मनुष्य में भी इसी प्रकार घटित करें।

शंका- कायोत्सर्ग का फल क्या हैं ?

समाधान- मूलाचार गाथा ६६८ में कायोत्सर्ग के कल के विषय में कहा है-

काओसग्गत्भि कदे जह भिज्जदि अंगुबंगसंधीओ
तह भिज्जदि कम्मरयं काउसग्गस्स करणेण।।६६८।।मू.

जिस प्रकार का आश्रव वंध जिन कारणों से हुआ था वे कर्म जिस पद्धति से धुलते हैं उस पद्धति को कायोत्सर्ग कहते हैं।

शंका- बोधि किसे कहते हैं। यह किसे दुर्लभ होती है ?

समाधान- **मिच्छादंसण रत्ता सणिदाणा किण्हलेसमोगाठा**
इह जे मरंति जीवा तेसिं सुलहा हवे बोही।।६९।।मू

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र को बोधि कहते हैं यह बोधि मिथ्या दृष्टि को अर्थात् जिसकी सच्चे देव, शास्त्र, गुरु और उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म में श्रद्धा या रुचि नहीं होती है तथा जो इस लोक और परलोक संबंधि भोगों की आकांक्षा जिनके अंदर रहती हैं ऐसा निदान करने वाले प्राणी तथा कृष्ण लेश्या जैसे क्रूर परिणामों के साथ जो मरण को प्राप्त होते हैं उनके लिए बोधि दुर्लभ होती है ऐसा जानना चाहिए। जो अपने रत्नत्रय का सम्मान नहीं रखते उसमें दोष लगाते रहते हैं उन्हें भविष्य में बोधि दुर्लभ हो जाती है और जो इससे विपरीत होते हैं अर्थात्-

सम्मद्दंसण रत्ता अणियाणा सुक्कलेस्समोगाढ़ा।
इह जे मरंति जीवा तेसिं सुलहा हवे बोही।।७०।।मू

सम्यग्दर्शन से जो प्राणी सहित होते हैं। किसी भी प्रकार के भोगों की आकांक्षा नहीं रखते हैं। शुक्ल लेश्या से मरण करते हैं ऐसे जीवों को बोधि सुलभ होती है ऐसा जानना चाहिए।

श्री, श्रीमान और जी

१. अपने गुरुजन, माता-पिता के नाम का उच्चारण करते समय नाम के प्रारंभ में 'श्री' या 'श्रीमान' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

२. नामोच्चारण के अंत में 'जी' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

३. अपने से उम्र, ज्ञान या धर्म आदि में ज्येष्ठों के नाम के आगे भी 'श्री' या 'श्रीमान' तथा अंत में 'जी' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

४. यदि वे कोई बात समझायें तो बीच-बीच में 'जी' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

५. यदि वे कोई बात हाँ या न में पूछें तो 'जी हाँ' या 'जी ना' कहना चाहिये।

६. इस प्रकार हमारी श्री, श्रीमान तथा जी की प्राचीन सभ्यता है।

७. बड़ों के लिए 'आप' शब्द का प्रयोग करें, तू तेरा शब्द का प्रयोग नहीं करें।

८. अधिक बोलने की बजाय अधिक सुनना चाहिये।

९. बोलो तो सदा सत्य, हितकर, प्रिय, मर्यादित व मधुर वचन बोलो।

१०. किसी की निंदा नहीं करना चाहिये और न ही सुनना चाहिये।

११. किसी के साथ हंसी-मजाक नहीं करना चाहिए।

१२. बुधवार या शुक्रवार को नख व केश निकालना या निकलवाना नहीं चाहिये।

१३. इस प्रकार यदि आप अपने बड़ों के प्रति आदर सम्मान वाचक शब्दों का प्रयोग करोगे तो बड़े भी आपके सम्मान का ध्यान रखेंगे और दूसरों को आपका सम्मान रखने के लिए प्रेरित करेंगे। जिससे सम्मान एवं आदर वाचक शब्दों की परम्परा एक आदर्शमयी परम्परा बन जायेगी तथा हम सभी को गौरवान्वित करेंगी।

संस्कार सुरभि से साभार

तोता नहीं, स्तोता बनो

(कृतिकार- आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज)

भो हंसात्मन्! स्तुत्य की स्तुति करना ही स्तवन (स्तव) है या जिन्होंने स्तवन के फल को प्राप्त कर लिया है, ऐसे चौबीस जिनेशों का स्तवन करना 'स्तव' (स्तुति) है। जिन बनना है तो पहले जिनभक्त बनो क्योंकि स्तुत्य बनने के पूर्व स्तोता बनना अनिवार्य है। स्तोता ही स्तुत्य बनता हे। जिनेन्द्र का स्तवन ही निज-स्वतन कराता है। जिसने जिन-स्वतन नहीं किया, उसका निज-स्तवन नहीं हो सकता है। स्तोता भक्त होना चाहिए, क्योंकि बिना भक्ति के स्तुति वैसी ही है, जैसे कि बिना वैराग्य के संयम, बिना आत्मा के शरीर, स्नेह से रहित महिलाओं का रोना, विधवा का श्रृंगार एवं गुरु-आज्ञा रहित शिष्य। जैसे ये शोभा को प्राप्त नहीं होते हैं, वैसे ही भक्ति विहीन स्तुति शोभायमान नहीं होती। कोरी स्तुति यानी निर्मल श्रद्धा-भक्तिहीन स्तुति। ऐसी स्तुति करने वाला सच्चा स्तोता नहीं, वह तो तोतावत् है। तोता बनने से कर्म-निर्जरा संभव नहीं। स्तुति मात्र से कर्म क्षय नहीं होते। कर्मक्षय का कारण है निर्मल श्रद्धा। सच्ची स्तुति वह जिसमें स्तोता स्तुतिमय हो जाय, स्तुत्य एवं स्तोता में एकत्वपना प्रकट हो जाय, जिसमें कोई भेद न दिखे। यानी ऐसी तन्मयता हो जिससे स्तोता के रोम-रोम में स्तुत्य झलकने लग जाया। चौबीस तीर्थेशों की स्तुति करना असंख्यात-गुणी कर्म-निर्जरा को प्राप्त करना है, किन्तु वास्तविक होनी चाहिए। हे योगी! स्तवन भी तेरी एक आवश्यक क्रिया है, तू इसे उत्साहित होकर कर। उत्साह से युक्त होकर की गयी स्तुति ही कर्म निर्जरा में हेतु है। सम्यग्दृष्टि के द्वारा की गयी स्तुति परम्परा से मुक्ति का कारण है, जबकि मिथ्यादृष्टि की संसार या मात्र पुण्यबंध का कारण है क्योंकि मिथ्यादृष्टि की दृष्टि परमार्थशून्य, मात्र लौकिक होती है। अत: निर्मल दृष्टि रखकर सच्चे स्तोता बनो, तोता या सोता नहीं। तोता को जैसे रटा दिया वैसा ही बोलना प्रारंभ कर देता है। उसे अंतरंग परिणति से शून्य होकर भाव-भासना ही नहीं। मन मयूर नाच ही नहीं रहा तो स्तुति कैसी? स्तुति करते समय हृदय आनन्दित हो उठना अर्थात् रोम-रोम पुलकित हो जाना ही सच्ची स्तुति है। आगम में स्वत छ: प्रकार का कहा है- नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव। चतुर्विंशति तीर्थंकरों के पवित्र एक-हजार-आठ नामों से आराधना करना 'नाम स्तव' है। चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाओं की स्थापना कर स्तुति करना 'स्थापना स्तव' है। तीर्थंकरों के शरीर व वर्ण भेदों का वर्णन करते हुए स्तुति करना 'द्रव्य स्तव' है। तीर्थकरों की निर्वाणभूमि कैलाशगिरि आदि व समवसरणभूमि आदि क्षेत्रों का स्वतन करना 'क्षेत्र स्तव' है। तीर्थंकर भगवंतों के पंचकल्याणक जिस काल में हुए हों उस काल में भक्ति, पाठ आदि करना 'काल स्तवन' है। भाव-स्तव आगम में दो प्रकार का कहा है- आगम भावस्तव, नोआगम भावस्तव। चौबीस तीर्थंकरों के स्तव का वर्णन करनेवाले प्राभृत के जो ज्ञाता हैं एवं तद् विषयक उपयोग से युक्त हैं, उन्हें आगम भावस्तव कहते हैं। चतुर्विंशति तीर्थंकरों के स्तवन से परिणत हुए परिणाम को नोआगम भावस्तव कहते हैं।

भो ज्ञानी! स्व की स्तुति चाहता है तो पहले पंचपरमेष्ठी का स्तवन कर। प्रभु-स्तुति करते-करते ही निज-स्तवन हो जायेगा। निश्चय से तू ही स्तोता है और तू ही है स्तुत्य। व्यवहार से चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति होती है, निश्चय से निज शुद्धात्मा की और परमशुद्ध निश्चयनय से न कोई स्तोता है और न स्तुत्य।

- 'निजात्म तरंगिणी' से साभार

सब भक्तों को नाज है

श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी

जिसने सच्चे मन से ध्याया, मिली उसे नवचेतना।
गुरु विराग ने उसे उठाया, देकर अपनी देशना।।
व्यसन मुक्ति अभियान चलाया, भारत स्वर्ग बनाया है।
आगे आगे आये गुरुवर, सबका साथ निभाया है
शाकाहारी, स्वच्छ रहें सब गुरु विराग की भावना।।
सम्मेद शिखर की पगयात्रा में, उमड़ा जन जन आज है
गुरुवर वो कोहिनूर हैं जिन पर, सब भक्तों को नाज है
दीन दुखी को सबल बनाती, गुरुवर की आराधना।
मुखमंडल पर तेज गुरु के फूलों सी मुस्कान है
जिनशासन के गौरव हैं ये, जन-जन-मन के प्राण हैं
सदा चिरायु स्वस्थ रहो तुम, हर मन की ये प्रार्थना।।

ज्ञान से न जले तो अज्ञान से दहकना होना

आचार्य विनम्रसागर जी

हम जिस दुनियाँ से आये हैं उस दुनियाँ में दहकते हुए आए हैं यह बात हमारे दुखों से साफ जाहिर हो रही है हमारे चारों और संक्लेशता भरी पड़ी है। दुनियाँ एक ऐसी आग है जहाँ या तो चिराग की तरह जलकर रोशनी बिखराई जा सकती है या आग की तरह जलकर भस्म हुआ जा सकता है आग की तरह जलने में बुद्धिमानी नहीं है केवल जानवरों की तरह अबोध होकर अपने जीवन को राग के हवाले कर देना है। राग का कहर पल-पल में है पग-पग पर है। अपना अस्तित्व पाना कठिन जरूर है लेकिन असंभव नहीं है अस्तित्व परिचित नहीं है पर वस्तु से बाह्य सुख से हम बहुत पहले से परिचित हैं उसी को सुख समझकर अज्ञान की धधकती आग में झुलसते रहे हैं। दुनियाँ में जो आये हो तो यह बात अक्राट्य सत्य है कि या तो ज्ञान से जलो सा अज्ञान की भट्टी में अपने आपको जला लो और झुलसकर मिली सम्पदा भी खो बैठो।

मनुष्य को मनुष्य इसीलिये कहा जाता है कि वही अकेला ऐसा प्राणी है जो इतना ज्ञाना प्रकट करने की क्षमता रखता है कि दुनियाँ की कोई भी वस्तु उसके ज्ञान से अछूती न रहे वह सम्पूर्ण दुनियाँ का दृष्टा हो सकता है। इंसान ही एक ऐसा प्राणी है जो भगवान बनने का चैलेंज ले सकता है लेकिन दूसरी ओर यदि इंसान अज्ञान की आग में गिर पड़े तो नीच से नीच नरक में पड़कर असंख्यात वर्षों तक दुखों के सागर में तड़फता हुआ भी जी सकता है। हमें यदि चिराग की तरह जलना है तो यह कला सीखने के लिए कोई जलते हुए चिराग के पास जाना पड़ेगा और अपने चिराग में ज्ञान रूपी तेल भरना पड़ेगा संयम रूपी बाती लगानी पड़ेगी तब यह चिराग जलेगा और खुद रौशन होगा तथा अज्ञान के ईंधन को दहन करके रख देगा। ऐसा ही ज्ञान हम सभी के अन्दर प्रकट हो तभी हमारा जीवन सार्थक हो सकता है।

आत्महत्या का हम सबको है दूसरे की हत्या का नहीं
घर को जला दिया घर के चिराग ने।।

एकत्व भावना से मन निराकुल होता है

भावना जीवन सृजन की महत्वपूर्ण आधार हैं। हम जिस प्रकार की भावना बनाते हैं वैसी ही क्रिया प्रतिक्रिया कर पाते हैं। अच्छा जीवन जीने की अगर तमन्ना है तो हमें अच्छी भावनाओं को तरजीह देना होगी। शुभ का उदय शुभ भावनाओं से ही होता है। अच्छे संकल्प अच्छे जीवन में कार्यकारी होते हैं। जो भी महापुरुष हुये, उन्होंने अच्छे संकल्प और अच्छी भावनाओं को आचरण का आधार बनाया, जिससे वे महानता की सीढ़ीयाँ चढ़ते चले गये।

हमें भावनाओं के दर्पण में अपने जीवन का प्रतिबिम्ब देखना चाहिये। भावनाओं में अपना जीवन चरित्र निहारना चाहिये। सत् भावनाओं से श्रेष्ठता का मार्ग प्रशस्त होता है और असत् भावनाओं से अश्रेष्ठ जीवन का निर्माण होता है। सच्ची भावनायें ही हमें दुर्गति से बचा सकती हैं। दुर्गति प्राप्त करने के लिये हमें कुछ भी नहीं करना पड़ता। किन्तु सुगति की प्राप्ति के लिये सारा जीवन दाँव पर लगाना पड़ता है। पानी को ऊपर चढ़ाने के लिये उपाय करना पड़ता है। किन्तु ऊपर से नीचे लाने के लिये श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ती।

बुरे संकल्प और बुरी भावनाओं से जीवन निरंतर पतन को प्राप्त होता है। भावनायें शूल भी बन सकती है, तो फूल भी बन सकती हैं। हम स्वयं अपने अच्छे बूरे भविष्य के निर्माता हैं। अच्छे संकल्प की भावना से बुरे आचरण का समापन नहीं होता, हमें बुरे आचरण का भी बुद्धि पूर्वक त्याग करना चाहिये। हमें श्रेष्ठ जीवन के लिये बारह भावनाओं का चिन्तवन करना चहिये। इन बारह भावनाओं को सच्चे रूप में भाने वाला मानव सत्य को जान लेता है। बारह भावनाओं का चिन्तवन करे बिना सत्य का परिचय असंभव है। एकत्व भावना के चिंतन से मन निराकुल होता है। निराकुल होना भी भावनाओं का फल हैं।

मुनि विमर्शसागर

भय का कारण-मायाचारी

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

मायाचारी व्यक्ति सदैव भयभीत रहता है कि कोई व्यक्ति देख, सुन न ले और हमारा रहस्य उद्घाटित न कर दे।

सुना जाता है कि राजा श्रेणिक अपने पुत्रमोह में इतना तल्लीन रहता था कि कदाचित् उसका पुत्र कुछ भी गन्दगी उस पर कर देता तो वह उससे घृणा नहीं करता और अपने हाथ में ही उसे लिये रहता था सही कहा है मोह व्यक्ति को अंधा विवेक शून्य बना देता है। एक बार भोजन करते समय, बच्चे के हाथ से लड्डू गिरकर गंदगी में चला गया, फिर भी राजा ने ग्लानि नहीं की और वह लड्डू स्वयं भी खाया और बच्चे को भी खिलाया, उसने सोचा किसी ने थोड़े ही देखा है बच्चा तो मेराहै, उसकी ही गन्दगी से स्पर्शित हुआ कोई बात नहीं। उसी दिन मंत्रियों ने आमोद-प्रमोद के लिये राज्यसभा में नगर की प्रसिद्ध नृत्यकारिणी को नृत्य हेतु बुलाया, कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, नृत्य एक गाने के माध्यम से प्रारंभ हुआ वे लाइन थी **'ललन की बतियाँ बताए दे हूँ'** राजा ने सुना चौंक गया, सावधानता से बैठ गया, वह सोचता है कहीं इसने देख तो नहीं लिया था, नृत्य चलता रहा, उसमें बार बार इस लाइन को दुहराया गया। तब राजा ने नृत्य समाप्त करने के उद्देश्य से उसे अंगूठी दी। पर इस नृत्यकारिणी ने समझा, राजा को यह लाइन **'ललन की बतियाँ बताए दे हूँ'** अधिक पसंद आई इसलिये उन्होंने हमें इनाम दिया है, इसलिये उसने नृत्य प्रारंभ ही रखा, तब पुन: राजा ने हार दिया, उसने समझा राजा को पूरा गाना नहीं, यही लाइन अच्छी लगी है, तभी वे सावधानता से इस गीत को सुन रहे हैं तथा नृत्य देख रहे हैं। और वह नृत्यकारिणी इस लाइन को ही बार-बार दुहराने लगी राजा ने उसे शान्त करने के लिये सारे आभूषण क्रमश: दे दिये लेकिन उसका नृत्य तथा गीत बंद नहीं हुआ तब राजा ने आवेश में आकर कहा गाने की ये लाइन 'ललन की बतियाँ बताए दे हूँ' समाप्त करो। ठीक है बतलाना हो तो बतला दो मैंने कोई बड़ा पाप नहीं किया, बस इतनी ही हमसे त्रुटि हो गई कि मैंने अपने बच्चे की गन्दगी में से लड्डू उठाकर खा लिया। इस प्रकार मायाचारी व्यक्ति सदैव भयभीत रहता है।

पुरुषार्थ की कीमत

श्रमणी आर्यिका विसुव्रताश्री माताजी

वह नया-नया आया था इस गाँव में दिनभर भटका। जो कुछ मिला वह खा पीकर एक समय रात बिताने के लिए पहुंच गया। गर्मी के दिन थे झोली खूंटी पर टांग दी और पैर फैलाकर जमीन पर ही सो गया। लगभग रात के नौ बजे होंगे तथा एक बैल का व्यापारी उस समय में आया उसने पास की चादर बिछाई तथा लाये हुए रूपयों की थैली सिर के नीचे रखकर सो गया।

खूंटी पर टंगी झोली ने जब व्यापारी के सिर के नीचे रखी थैली को देखा तो आहिस्ता से बोला- बहन मजे में तो हो। बहन शब्द सुनकर थैली ने ऊपर देखा। थैली को बहन शब्द अच्छा न लगा।

झोली ने थैली को पास बुलाया। पर थैली नहीं गयी तो बोली तुम हम एक बिरादरी के है, फिर भी मुझे देखकर तुम्हें थोड़ा सा भी प्यार नहीं आया। तुम्हारा मालिक भी तुमसे सब कुछ उड़ेलता है तो मेरा मालिक भी बिना किसी भेदभाव के सब कुछ मेरे सुपुर्द कर देता है।

तुम्हारा कपड़ा कम कीमत का तथा फटा-टूटा है। व मेरा कपड़ा बढ़िया और मंहगा है। थैली ने कहा- इसलिए मैं तुझसे नफरत करती हूँ ऐसी बात नहीं। तो फिर ? झोली ने पूछा तो थैली बोली यदि मैं तुम्हारे पास रहना शुरु कर दूँ तो श्रम पुरुषार्थ की कीमत दुनियाँ में कुछ भी न रहेगी।

साथ तो अच्छे, लोगों का ही करना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव के ४०वें क्षुल्लक दीक्षा दिवस पर समर्पित भावाञ्जलि-

प.पू.उपसर्ग विजेता, युग प्रमुख श्रमणाचार्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज

गुरु पूजन

श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी

स्थापना- (ज्ञानोदय द्वंद)

परम पूज्य हे गणाचार्य श्री, विरागसागर जी गुरुवर।
विमलकीर्ति, चर्या चूड़ामणि, परम दिगम्बर हे श्रुतधर।।
चारित्र शिरोमणि, राष्ट्रसंत, श्रेयांसगिरि के उद्धारक।
न्यायकेशरि योगिराज हे, कुशल संघ के संचालक।।
आगम ग्रंथों का ज्ञान नहीं, न भक्ति की पहचान हमें।
हम भक्त आपके हैं गुरुवर, औ मानें हम भगवान तुम्हें।।
आओ तिष्ठो मम हृदय बसो, तुम मेघ सदृश मिले गुरुवर।
बरसो-बरसो हे नाथ मेरे, मन की प्यासी मरुभूमि पर।।

ऊँ हूँ परम पूज्य राष्ट्रसंत, युगप्रमु श्रमणाचार्य, गणाचार्य श्री १०८ विराग सागर यतिवर अत्र-अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापना। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्नाहेतो भवभव वषट् सन्निधिकरणम्।।

उपसर्गों की अग्नि परीक्षा, उत्कर्षों तक ले आयी।
राष्ट्रसंत, उपसर्ग विजेता, धन्य आपको गुरुराई।।
पावन नीर समर्पित करके, समता जल से हृदय भरूँ।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. उपसर्ग विजेता युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो जन्म जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धांत रत्न, श्रुत पारग हो, गुरु दक्ष चार अनुयोगो में।
महाधवल जयधवला वाचक, चर्चित विद्वत लोगों में।।
मलयागिरि चंदन भेंट चढ़ा, गुरु आज्ञा चंदन शीश धरूँ।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. विश्वहितैषी, आगम रक्षक, युगप्रमुख, गणाचार्य श्री १०८ विराग सागर यतिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बुन्देलखण्ड के प्रथम सूरि, तुम क्षत को हो अक्षत करते।
निस्पृही हृदय के भावों से, भव्यों की सागर को भरते।।
श्रेष्ठ भक्ति श्रद्धा के अक्षत, चरण चढ़ाकर शरणं गहूँ।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. श्रमण शिल्पी, योग सम्राट, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गुण सुमनों से सुरभित गुरुवर, मन-वच-तन से इक जैसे।
बाल-वृद्ध प्रति समदर्शी हो, दीक्षा सिद्धहस्त ऐसे।।

अर्चा हेतु लालायित रहते, कमल केतकी पुष्प तरु।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. अनुशासन रत्न, आचार्य गौरव, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो कामवाण विध्वंसनाथ पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अल्प आयु में दीक्षा लेकर, उपवासादिक बहुत किये।
तन दुर्बल आतम बलशाली, नाथ! आपका इसीलिये।।
चैतन्य गुणों के पोषण को, अर्पण करता अति मिष्ट चरूँ।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. राष्ट्रसंत न्याय भास्कर, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नवैधं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल ज्योति के आराधक हे, तारण तारण जहाज खास।
मम सूरदास की अरज सुनो, रत्नत्रय निधि का दो उजास।।
प्रज्ज्वलित किया दीपक अर्पण, कैवल्य ज्योति का वरण करूँ।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. सिद्धांत चक्रवर्ती, दीक्षा सिद्धहस्त, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ ज्येष्ठ तप तपते गुरुवर, कमष्टिक क्षय करने को।
सूरी गच्छाचार्य आपको, आतुर मुक्ति वरने को।।
धूप दशांगी भेंट चढ़ाकर, अष्ट कर्म का दहन करूँ।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. न्याय भास्कर, बुंदेलखण्ड के प्रथमाचार्य, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुसमंजस सूत्र करें धारण, श्रुत रत्न गुरु निज अज्ञा में।
गुरुभक्ति चंद्रगुप्त जैसी, रहते हो गुरु की अज्ञा में।।
श्रेष्ठ सरस फल अर्पित करके, मुक्ति सुफल सत्यार्थ वरूँ।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. आगम अतिद्यन्वा, ज्ञान दिवाकर, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

समकित जल ज्ञान बना चंदन, अक्षत गुरु आज्ञा मैं पालूँ।
गुण सुमन, चरु सुख आध्यात्मिक, रत्नत्रय ज्योति जलाऊँ।।
तप द्वादश धूप, ध्यान का फल, निर्वाण लक्ष्मी वरण करूँ।
परम पूज्य हे गणाचार्य गुरु, विराग सिंधु को नमन करूँ।।

ऊँ हूँ प.पू. चारित्र शिरोमणि, अध्यात्मयोगी, श्रमण रत्नाकर, सूरि गच्छाचार्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घं पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलमाला

दोहा- धन्य हुई श्यामा जिन्हें, मिले आप से लाल।
कपूरचंद सुत हे गुरु, जग गाये जयमाल।।

चौपाई- मस्तक पर है तेज ज्ञान का, जीवन में ना लेश मान का।
दोनों भौंहे धनुष समाना, मानो साधे कर्म निशाना।।
दृष्टि दोनों तीर बनी है, मूरत ये अतिवीर बनी है।
घ्राण आपकी चंपक जैसी, घृणा तजो-यह शिक्षा देती।।
अधरों पर मुस्कान तुम्हारे, जो देखे अपना मन हारे।
मुख मण्डल की शोभा न्यारी, छवि विमल सन्मति की प्यारी।
वात्सल्य में विमल दिखाये, अनुशासन में सन्मति आये।
कर में गुरुभक्ति की रेखा, देवों ने भी माथा टेका।।
शिष्योत्तम भी आप कहाये, गुरु सर्वोत्तम हमने पाये।
भद्रबाहु सम बाहु तुम्हारे, सुसंचालन क्षमता धारें।।
चरण युगल भव तारण नौका, भला हैं करते सब भक्तों का।
उछरे भू चौकी और थाली, भेंट भक्त ने अनपुम पाली।।
आँखों का अनुशासन देखो, नेता मुखिया तुम कुछ सीखो।
आदिनाथ सी झलक सुहानी, है पंचमयुग को हैरानी।।
षट्खण्डागम आर्ष पढ़ाया, सिद्धांत चक्रवर्ती पद पाया।
ग्रंथ रचे मन ग्रंथी खोले, विद्वज्जन का भी मन डोले।।
शुद्धोपयोग सुचर्चित भारी, सम्यग्दर्शन जगहितकारी।
आगम चक्खू साहू रचे हैं, ग्रंथ शताधिक हमें दिये हैं।।
निश्चय को निश्चय से तौलें, न झूठा व्यवहार को बोले।
वस्तु व्यवस्था नहीं खिलौना, समझ सके न ज्ञान से बौना।
तीन रत्न दुर्लभ हैं देते, फिर भी निज विरागता लखते।
नाथ! आपकी महिमा भारी, तीन लोक है बना पुजारी।।
आप सूरी अर्हद्बलि जैसे, युग प्रतिक्रमण कराया ऐसे।
यति सम्मेलन दृश्य सुधना, सारा विश्व हुआ दीवाना।।
कहें शिष्य-प्रशिष्य तुम्हारे, तुम हो चंदा हम हैं तारे।
जिनमत नभ में चमके ऐसे, आप गुरु अकलंक के जैसे।।
प्रवचन कालुष दूर भगाते, मंत्र मुग्ध सभी रह जाते।
उपसर्गों की अग्नि परीक्षा, देखे तुमको पाश्व सरीखा।।
धैर्य कहाँ ये गुरु ने पाया, अंबर का भी दिल भर आया।
उपाधियों ने की तप पूजा, जब ना पाया तुमसा दूजा।।
हर अंतर में वास तुम्हारा, विश्व बना है दास तुम्हारा।
हर घर वा परिवार सुखी हो, जग में कोई नहीं दुखी हो।।

सबको हाथ बिठा ले जाऊँ, सिद्धालय का राज्य दिलाऊँ।
इतनी पावन रखें भावना, लौकिक सुख की नहीं कामना।।
गुरुवर रोम-रोम में आओ, हमको निज सम आप बनाओ।
णमोकार साकार आप हैं, सद्गुण के आधार आप हैं।
विश्वसंत हैं आप निराले, विपद दास की पल में टाले।
कृतियां दो हजार वर्षों की, टीका ना थी मगर किसी की।।
विज्ञजनों ने विनय करी है, गुरुवर की तब कलम चली है।
टीकाएं सुसंस्कृत भाषा, पूरण हुई जगत की आशा।।
'वारसाणुपेक्खा' पर टीका, 'सर्वोदया' उपहार अनोखा।
मानद डॉक्ट्रेट महद उपाधी, पायी प्रथम दिगम्बर सूरी।।
'रत्नत्रयवर्धिनी' लिखी है ,'रयणसार' पर टीका की है।
पाहुड़ द्वय पर भी रची है, श्रमण प्रबोधनी धनी है।।
दश भक्ति प्राकृत में आयी, गुरुवर ने है स्वयं बनायी।
चिंतन मनन अनूप तुम्हारा, अमृत रस की बहती धारा।।
जैनागम न भुला सकेगा, कुंदकुंद सम तुम्हें लखेगा।
गणाचार्य हो गुरु कहाये, सरस्वती भी गाथा गाये।।
'व्यसन मुक्ति' अभियान चलाते, व्यसनमुक्त यह देश बनाते।
कह न सकें हम महिमा भारी, रहें आपके नित आभारी।
अर्ज करें सब यह नर-नारी, पूजा हो स्वीकार हमारी।
जन्म जन्म का दास बना लो, पद पंकज में हमे बिठा लो।।

पूर्णार्घ्य

ज्ञान-ध्यान-तप लीन हो, पंचाचार प्रवीन।
चाह यही करते रहें, पूजा नित्य नवीन।।
पूर्ण अर्घ्य सम्पूर्ण हो, भव संताप नशाय।
विराग गुरुवर के चरण, हमको सदा सहाय।।

ॐ हूँ प.पू. चर्या चूड़ामणि आचार्यरत्न, सिद्धांतरत्न समता मूर्ति, विश्वसंत, विमलकीर्ति, न्याय मार्तण्ड, विद्या वारिध, क्रांतिकारी संत, समाधि सम्राट, प्रज्ञा शिरोमणि वात्सल्य पुंज शिरोमणि प्रज्ञानी, युग प्रमुख श्रमणाचार्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिधारा शांतिनाथ इस काल के, परम शांत गुरुदेव।
शांतिधारा नित्य करूँ, विराग पद की सेव।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि

दोहा- गुरु हो फिर भी दूर है, गुरुता का अभिमान।
पुष्पों सा कोमल हृदय, गुरु विराग की शान।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

जाप्य- ॐ हूँ श्री गणाचार्य विरागसागराय नमः

भोजन में काल शुद्धि

संकलन-श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

यद्यपि काल निष्क्रिय है फिर भी घड़ी, घण्टा, दिवस आदि व्यवहार काल है। मूलत: रात-दिन सूर्योदय और सूर्यास्त से संबंध रखते हैं। रात और दिन का प्रभाव इस पृथ्वी पर रहने वाले समस्त चेतन-अचेतन द्रव्यों पर नियम से पड़ता है। जैसे दिन में पेड़ पौधों में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया होती है उस क्रिया में कार्बोहाइड्रेट (ग्लूकोज और फ्रक्टोज) तथा ऑक्सीजन का निर्माण होता है। जब पेड़ पौधे रात्रि में क्रिया करते हैं तो एल्कोहल और कार्बन डाई ऑक्साइड का निर्माण होता है। पेड़ पौधों के रात और दिन में होने वाले इन परिवर्तनों से सिद्ध होता है कि काल का प्रभाव प्रकृति पर अवश्य पड़ता है।

पेड़ पौधों के समान मानव शरीर और मस्तिष्क पर भी काल का प्रभाव पड़ता है। इसी कारण जैसे विचार प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में होते हैं, मनोमस्तिष्क शांत रहता है, स्मरण शक्ति तेज रहती है वैसी अन्य समय में नहीं रहती है।

रात्रि के चार पहर होते हैं प्रथम को रौद्र पहर, दूसरे को राक्षस पहर, तीसरे को गंधर्व पहर और चौथे को मनोहर पहर कहते हैं। जो रात्रि के रौद्रकाल में सोता है उसे प्राय: रौद्र स्वप्न आते हैं व स्वप्न दोष आदि होते हैं इसलिए रौद्र पहर पूरा और राक्षस पहर का आधा सा भाग निकल जाने पर शयन करना चाहिए और जब मनोहर पहर का काल लगभग आधा भाग शेष रहे तब उठ जाना चाहिए। अर्थात् लगभग १० बजे सोना और ५ बजे सोकर उठ जाना चाहिए।

भोजन तीन प्रकार का होता है १. सात्विक २. राजसिक ३. तामसिक। अनाज, फल फूल, साग-सब्जी, दूध आदि शाकाहारी सात्विक आहार है। मछली, अण्डे, मांस आदि तामसिक आहार हैं सात्विक शाकाहारी भोजन भी यदि रात्रि में बनाया अथवा खाया जाए तो वह भी तामसिक ही हो जाता है इसी कारण ऋषि मुनि कहते हैं- सूर्यास्त होते ही भोजन मांस के समान व जल रूधिर के समान हो जाता है। अत: रात्रि भोजन नहीं करना चाहिए। रात्रि में किया गया भोजन तामसिक, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक इन्द्रिय उत्तेजक, ब्रह्मचर्य, बल, आयु और बुद्धि आदि का नाशक होता है। जबकि दिन में किया गया भोजन आयु, सुख, बल, बुद्धि प्रीति और आरोग्य को बढ़ाने वाला होता है।

आलू, प्याज आदि जमीकंद तामस प्रवृत्ति के होते हैं इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि वे पृथ्वी के अंदर अंधेरे में रहते हैं। आप कितना भी बाहर से प्रकाश कर दें लेकिन पृथ्वी के अंदर उत्पन्न होने वाले उन जमीकन्द की तामसिक वृत्ति को नहीं रोक सकते हैं। इसी प्रकार रात्रि में बनाये गये भोजन को तामसिक वृत्ति से नहीं रोका जा सकता, चाहे कितना भी प्रकाश कर लिया जाए। इस प्रकार रात्रिकालीन प्रभावों को देखते हुए रात्रि के तामसी, तमस, तिमस्रा, निशा आदि अनेक पर्यायवाची नाम पड़ गये है।

जैसे व्यायाम करते समय ऊर्जा ऊष्मा में बदलती है उस समय साधारण अवस्था की अपेक्षा ऑक्सीजन की अधिक आवश्यकता होती है। वैसे ही भोजन करते समय शरीरिक व्यायाम होता है उसे आक्सीजन की आवश्यकता होती है और भोजन करते समय उसे पचाने के लिए आक्सीजन की आवश्यकता अधिक पड़ती है इस प्रकार भोजन करते समय अन्य अवस्था की अपेक्षा चार गुणी आक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है इसकी पूर्ति दिन में भोजन करते समय ही होती है। अत: दिवा भोजन ही श्रेयसकर सर्वश्रेष्ठ है।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

सरल सहज है, उपकारी गुरु विरागसागर जी

एक साथ अनेकानेक बुजुर्ग संत साध्वियों के परम उपकारी है

जीवन की विशेषता को पाने के लिये प्रथम प्रयास से अंतिम प्रयास तक अपनी यात्रा अगर संयम से जारी रखता है तो शायद वह शीघ्र ही अपनी मंजिल पर विजय की पताका फहरा सकता है। मानव जीवन में परमात्मा को पाने के लिये प्रेम वात्सल्य का होना अनिवार्य हैक्योंकि किसी भी यात्रा का शुभारंभ और सम्पन्न प्रेम वात्सल्य पर ही निर्भय है। हम बात कर रहे आदि ब्रह्मा भगवान श्री आदिनाथ से अहिंसा के अग्रदूत जैनधर्म के चौबीसमें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के बताये मार्ग और सद्मार्ग सद्आचरण को अपने जीवन में अपने ग्रह आचार्य श्री शिरोमणि निमितज्ञानी आचार्य श्री विमलसागर जी के सुयोग्य शिष्य जो कम समय में अपने गुरु से जिनेश्वर दीक्षा लेकर उपसर्ग विजेता, वात्सल्य प्रम तर्क संगतवक्ता, अतिसहज सरल आचार्य व बुंदेलखण्ड के प्रथम आचार्यश्री विरागसागर जी ससंघ धर्मनगरी और निर्ग्रंथों का नवधा भक्ति पूर्वक सदैव सेवा भक्ति करने वाला ललितपुर जहाँ श्री पार्श्वनाथ जैन अटा मंदिर जी में श्री दिगम्बर जैन समाज पंचायत समिति के विन्रम भाव और सअनुरोध से ग्रीष्मकालीन वाचना का शुभारंभ किया है। इस वाचना जहाँ सद्ज्ञान साधर्म को मिल रहा है तो वहीं आचार्यश्री विरागसागर जी में एक विशेषता में स्वयं अपने मतानुसार पाई हैं।

जहाँ इस भौतिक और स्वार्थ रूपी संसार में जहाँ एक पिता अपने एक नहीं अनेक बच्चों की पालन सेवा अपने समयानुसार करता है लेकिन जब बच्चों का वक्त आता है तो तब अधिकांश इसी समाज में देखने व सुनने में कोई हद तक सुनने को मिल जाता है कि वह पिता अपना बुढ़ापा अपने बच्चों में जीवन किस्तों में गुजारता तो कई बच्चे तो अपने बड़े माता-पिता बेहसहारा छोड देते हैं ? लेकिन धर्म की दृष्टि से समाज में ऐसे अनेक बुजुर्ग बड़े बूढ़े श्रद्धालुओं ने अपने शेष जीवन आचार्यश्री विरागसागर जी प्रेम वात्सल्य को देखकर समर्पण किया और गुरु ने उन्हें सद्मार्ग का ज्ञान दिया, उसके उपरांत दीक्षा देकर आज एक नहीं सैकड़ों की संख्या में बुर्जुग मुनिराज, ऐलक, क्षुल्लकजी एवं साध्वी संघ में है जो आचार्यश्री के दिशा निर्देशन गुरु आज्ञा का पालन निदोषचर्या से जारी क्रिया कर रहे। आचार्यश्री की यह विशेष अद्वितीय और अदुभूत विशेषता है कि वह अपने बुर्जुग शिष्यों को गुरु के रूप तो कभी शिक्षक तो कभी बेटे के रूप किसी न किसी रूप में उनकी बात सुनते है ओर उनकी हर एक समस्या का समाधान आगमानुसार कर रहें ऐसे महान गुरु वंदनीय है।

आचार्य श्री विरागसागर का अवतरण दिवस ललितपुर जैन समाज को मनाने को मिला एक सौभाग्य की बात है आचार्यश्री सदैव एक ही बात डंके की चोट पर बड़े ही सरलभाव से अपने प्रवचनों में कहते है कि हमें परनिंदा से बचना चाहिए कोई कुछ भी कहे तुम्हारे बारे में अगर सत्य तुम हो और साथ सत्य है तो पराजय कोई नहीं दे सकता। आचार्य श्री द्वारा ग्रीष्मकालीन वाचना में परमात्म प्रकाश जिसको आचार्य श्री योगीन्दुदेव विरचित है उसको बड़े सरल ढंग से वाचन कर रहे हैं। ५४वाँ अवरण दिवस जनपद के लिये दूसरा योगदान आचार्यश्री द्वारा होगा पूर्व में जैनेश्वरी दीक्षा देकर ललितपुर को प्रथम जनपद दीक्षा के रूप में बनाया था अब अवतरण दिवस से पुन: वात्सल्य देकर उपकार किया, ऐसे गुरु जो अनेकानेक कष्ट सहकर भी दूसरों का उपकार करते आ रहे है उनके चरणों में कोटि कोटि नमन

रवि चुनगी, पत्रकार

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अत: सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

जन परमात्मा की शरण में जाति-पाति व अमीर गरीब का कोई भेदवभाव नही होता, तो फिर मनुष्य ऐसा भेदभाव क्यों करता है।

धर्म की परिभाषा व्यापक और सार्वभौतिक है। धर्म संसार के प्रत्येक प्राणी को बिना किसी भेदभाव के सुख शांति से जीना सिखाता है। आज मानवता खण्ड-खण्ड हो रही है। धर्म और सम्प्रदायों की संख्या तो बढ़ रही है, परन्तु इन्सानों की संख्या घट रही है। संसार में सभी प्राणियों को अपने प्राण प्रिय है, इससे प्रियतम वस्तु दूसरी कोई नहीं है। इसलिए प्रत्येक प्राणी का दायित्व है कि वह न तो किसी प्राणी के साथ भेदभाव करें और उसको किसी भी प्रकार हानि या दु:ख न पहुँचाए एवं न उसके प्राणों का घात करें। धर्म का वास्तविक स्वरूप करूणा। वात्सल्यता करना ही संसार का सबसे बड़ा धर्म है। भगवान महावीर स्वामी जी ने तो विश्व के समस्त प्राणियों को समानता, स्वतन्त्रता और स्वाभिमान का उपदेश दिया और कहा था, संसार के सभी प्राणी आत्म सत्ता के स्तर पर समान है। उनमें अर्न्तहित सम्भावनाएँ समान है और सभी प्राणियों के प्रति करुणा और संयम ही अहिंसा है। अंहकार-ममकार, मायाचार के कारण नैतिकता सिसक रही है, आध्यामिकता सिंहर रही है और मानवता दर्द भरे आँसू बहा रही है। महात्मा ईसा मसीह जी ने कहा है, प्रेम सबसे करो, भरोसा कुछ लोगों पर करो, परन्तु नफरत किसी से मत करो। अपने पडोसियों से ऐसा प्रेम करो जैसा तुम स्वयं से करते हो। हजरत मुहम्मद साहब का कथन है, 'तुम इस पृथ्वी की जीव-जन्तुओं पर दया करो, परमात्मा तुम पर दया करेगा।' प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का कथन है, कि तीर्थंकर महान करूणा के अवतार है। सम्यक दर्शन के साथ दया करूणा होगी, तभी मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होगा। दया के बिना धर्म ही नहीं इसके बगैर धर्म खड़ा नहीं हो सकता। दया से ही धर्म प्रारम्भ होता है, मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। दूसरों के दु:ख दर्द देखकर दया नहीं आती, तो ऐसा धर्म किस काम का? स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का कथन है, प्रत्येक मनुष्य के भीतर जो आध्यात्मिक सार वस्तु आत्म तत्व विद्यमान है, उसकी अभिव्यक्ति करो। किसी में दोष मत देखो क्योंकि सभी धर्मों, ग्रंथों में कुछ न कुछ अच्छाई विद्यमान है। अपने जीवन के द्वारा यह दिखा दो कि धर्म का तात्पर्य केवल कुछ शब्दों, नामों या सम्प्रदायों से नहीं बल्कि इसका तात्पर्य है- आध्यात्मिक अनुभूति। संत तुलसीदास जी का कथन है परहित सरिस धर्म न भाई, पर पीड़ा सम नहीं अघमाई। अर्थात् दूसरे के हित के समान धर्म नहीं और दूसरों को कष्ट देने से बढ़कर अधर्म नहीं। जैन प्रागम में स्पष्ट कहा है- 'दया मलो भवेत् धर्म।' अर्थात् जहाँ मूल में दया होती है, वही धर्म होता है। दया का आश्रय लो, मूल में अपने आप मिल जाएगा।

महान सूफी संत राबिया का कहना है, सच्चे ईश्वर की भक्ति किसी भी लोक परलोक की कामना के लिए नहीं होती, वह तो जनहेतु की हुआ करती है। जब मनुष्य के करूणा के नेत्र खुल जाते हैं तो वह अपने को दूसरों में और दूसरों को अपने में देख सकने में समर्थ हो जाता है। यदूदी धर्माचार्य रब्बी बार्डिक्टेव का कथन है, दीन दु:खियों को निष्काम सेवा ही भगवान की सच्ची प्रार्थना और भक्ति है, जो मनुष्य के जीवन को रूपांतरण कर देती है। रामचरित मानस में कहा है, हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम ते प्रगट होहि मै जाना। मानव जीवन का प्रारम्भ ही व्रत होता है, जब प्रभु की शाश्वत सत्ता को भक्ति के माध्यम से जान लेते हैं। दु:ख इस बात का हैं कि हम धर्म शास्त्रों को सुनते है, पढ़ते है, बहस भी करते है परन्तु अपने आचरण में पालन करने का प्रयास नहीं करते, जिसके कारण हम सुख शांति व आत्मा की अनुभूति से वंचित हो जाते है। जो संसार के समस्त प्राणियों के हृदय में विराजमान है, बस उसी सार्वभौम परमात्मा की शरण ले लो, फिर किसी भी सांसारिक शरण लेने की आवश्यकता ही नही रहेगी। आचार्य उमा स्वामी जी ने 'तत्वार्थ सूत्र' में कहा है परस्पर ग्रहों जीवानाम अर्थात्- जीवों को परस्पर में उपकार करना चाहिए। किसी कवि ने कहा है-

'दीन दु:खी जीवों पर, मेरे उर से करूणा स्त्रोत वहे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा करके, यह मन सुख पावे।।'

भगवान महावीर स्वामी जी का कथन है, जो मैं कहता हूँ उसे पहले स्वयं जाँच परख कर लो और जब तुम्हें वह बात ठीक लगे, तभी मानो। मेरे शब्दों को पकड़कर मत बैठना स्वयं के आचरण में उतारना। इच्छाएँ आकाश के समान

अनन्त है और उसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती व संतोष संयम से जीती जा सकती है। धर्म और महापुरुषों का काम तो प्रेमपूर्वक आपस में जोड़ना है, तोड़ना नहीं। भगवान महावीर स्वामी जी की दृष्टि से हिंसा ओर भ्रष्टाचार का मूल परिग्रह है। भगवान महावीर स्वामी जी ने परम अहिंसक व अपरिग्रही बनने के लिए घर, परिवार, राज्य का वैभव व सत्ता सम्पत्ति धन दौलत आदि सब कुछ का त्याग कर दिया। संसार से आसक्ति, ममता, वासनाओं की गंध आदि छोड़कर सबसे प्रथम दिगम्बर अवस्था को धारण किया, फिर अरिहंत की अवस्था को धारण करने के बाद मोक्ष पद को प्राप्त किया। किसी कवि ने कहा है-

भूखा-प्यासा पड़ा पड़ौसी, उसने रोटी खाई क्या?
दुखिया पास पड़ा है, तूने मौज उड़ाई क्या?
दुखियों के दुःख देकर, आंसू चार बहाया कर।
प्रेमी बनकर ईश्वर के गुण-गाया कर।।

महेन्द्र कुमार जैन, 'भगत जी' गाजियाबाद

पद्म प्रभु मोहन कूट

संकलन- श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माता जी

पद्म प्रभु भगवान का जन्म कौशाम्बी नगर में हुआ तथा मोक्ष सम्मेद गिरि के मोहन कूट से एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष पधारे। इस मोहन कूट से अब तक ९० कोटि ८४ लाख ४२ हजार ७२७ मुनिराज। इस कूट की वंदना का फल एक कोटि प्रोषधोपवास के फल के बराबर कहा है। सुप्रभु राजा ने इस कूट की उल्लास पूर्वक वंदना की थी उसकी कथा संक्षेप में ऐसी है।

भरत क्षेत्र के बंग देश की प्रभाकर नगरी में सुप्रभ राजा हुआ। उनकी रानी सुषेणा थी। एक बार राजा सपरिवार क्रीड़ा करने वन गया। वहाँ पर चारण ऋद्धि मुनि को देखा और उन्हें प्रणाम कर पूछा स्वामिन्! आपको यह चारण ऋद्धि किस कारण से प्राप्त हुई है सो कहा। तब मुनिराज ने कहा- राजन्! मुझे यह सिद्धि सम्मेद गिरि की वंदना करने से प्राप्त हुई। तब राजा ने कहा हे महाराज! सम्मेद गिरि यात्रा करने के लिये मेरा मन उत्सुक हुआ है, मेरा संकल्प पूरा होगा या नहीं? मुनिराज ने कहा अवश्य पूरी होगी।

राजा ने यह सुनकर आनंद से घर वापस आया और यात्रा की तैयारी करने लगा। चतुर्विध संघ का सम्मान करके राजा कोटि मनुष्यों के संघ सहित यात्रा के लिए निकला। उसके साथ में गायक, वादक, नर्तक व नर्तकियाँ भी थी। किसी भी कार्य की सिद्धि प्राप्त कराने में समर्थ, लोगों को यात्रोन्मुख करने के लिए दुन्दुभि बाजे बजाकर सूचना दी। राजा ने उत्कृष्ट ध्वजाओं की शोभा से सहित महोत्सव पूर्वक कितने ही दिनों तक सम्मेद गिरि यात्रा की। मोहन क्रूट पहुंचकर विधिपूर्वक अष्ट विध पूजा विस्तार से की।

उसके बाद राजा विरक्त हुआ। अपने पुत्र रतिषेणा को राज्य देकर वन में दीक्षा लेकर मुनि हो गया। ८४ लाख मुनियों के साथ तप करके मुक्ति प्राप्त की। इस प्रकार के प्रभाव से युक्त होने के कारण इस कूट का नाम मोहन कूट पड़ा।

गिरिराज की मोहनकूट को जो भक्ति से देख करके पूजन नमस्कार करता है उसकी अभिलाषा की पूर्ति हो जाती है वह इस संसार के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

सम्मेद शिखर महात्म्य

निष्ठा-समर्पण

निष्ठा-समर्पण से दृढ शिष्य कभी भी अपने गुरुओं साधुओं की बुराई नहीं सुन सकता। स्वयं उपसर्ग परीषह संबंधी लाखों कष्टों को सह सकता है पर गुरु निंदा का छोटा वाक्य भी उसे असहनीय वेदना उत्पन्न करा देता है। क्योंकि वह अपने गुरु के प्रति प्राण पन से समर्पित है, गुरु ही उसके जीवन के मूलाधार हैं। वे ही उसकी आस्था के केन्द्र बिंदु हैं। आस्थावान के लिये गोविंद से बड़े गुरु होते हैं। अपने प्राणों से कीमती उनकी सम्मान, प्रतिष्ठा होती है। वे विचारते हैं जिन्होंने मुझे तप: पूत बनाया, रत्नत्रय रूप अमूल्य निधि प्रदान की, पतित से पावन बनाया, जीवन में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को मिटा कर ज्ञान के दीप जलाये, जिनके उपकारों से ऋण होना किसी भी प्रकार संभव नहीं, उनकी निंदा सुनने से पहले ही मेरे कान बधिर हों जाये। यदि सुनने में आते हैं तो सहन नहीं होते। वह उस व्यक्ति को उचित सबक देते हैं। जोंक नहीं हंस बनो। छिन्द्रान्वेषी नहीं गुणान्वेषीकि बनो। अनास्था की दृष्टि को हटाकर श्रद्धा से देखो। नहीं देख सकते हो तो आंखे बन्द करो। भक्तिपूर्ण वाक्य नहीं बोल सकते हो तो चुप रहो। पर गुरुओं के बारे में गलत बोलने का कोई अधिकार नहीं। उनकी परीक्षा मत करो, वे तो स्वयंक जग के परीक्षक हैं।

सामायोजित शिक्षाएँ के साभार से

युग की पीड़ा

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

हे वीर!
अतिवीर, वर्धमान,
सन्मति, महावीर
तेरे शासन में
रहकर भी
उठती है बार-बार
यही पार।
खो रहा मानव
मानवता को
यही मेरा दु:ख
धर्म के नाम पर
आडम्बरों की भीड़
यही मेरी पीर।
हे वीर!
आपके शासन में
कुछ अल्पज्ञ-अज्ञानी
आपकी दी हुई
शिक्षा को भूल रहे है,
भेदभाव-पंथवाद
गुरुवाद-संतवाद
फैलाकर
फल-फूल रहे हैं।

गुरुवर विराग सागर

रच. कांति कुमार जैन 'करुण' खिमलासा

गुरुवर विरागसागर, खुश है तुम्हें ही पाकर।
आये चरण शरण तुम्हारे, सेवा का भाव लेकर।।
गुरुवर तुम्ही हमारे,
तुम हो हम सहारे।
जीवन मिला है नरभव,
आये तुम्हारे द्वारे।।
कृपा करो हे गुरुवर, तुम ही धर्म दिवाकर।
गुरुवर विराग सागर, खुश है तुम्हें ही पाकर।।
कितना हे संघ बनाया,
आचार्य भी बनाये।
औ' समता हृदय में लाये जग को अरे! जगाया।
हमको अरे! जगाओ, गुरुवर यहाँ है आकर।
गुरुवर विराग सागर, खुश है तुम्हें ही पाकर।।
हम क्या करे हे गुरुवर,
शक्ति नहीं है मुझमें।
कैसे दर्श करे हम,
रहती है भावना मुझमें।।
तुमरा ही ध्यान आता, बतलाओं मेरे गुरुवर।
गुरुवर विराग सागर, खुश है तुम्हें ही पाकर।।
उम्र हो गयी पचासी,
जन्म शरद पूर्णिमा हमारा।
णमोकार मंत्र को भजते,
जीवन का यह सहारा।।
गुरुवर 'करुण' पुकारे, कैसे पाऊँ में निज धर।
गुरुवर विराग सागर, खुश है तुम्हें ही पाकर।।

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा हैं

पं. बृजेन्द्र कुमार जैन (बीरू)

यह बात सही सब कल्पवृक्ष से मनवांछित फल पाते हैं,
पर शिवरमणी को देने में वे निष्फल हो जाते हैं।
इस चेतन कल्पतरु के आगे कल्पवृक्ष भी हारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

यह संसार दु:ख का घर है इसमें नहीं है सुख साता,
मेरा सम्यक् धर्म प्रकट हो यही भावना मैं भाता।
पंडित पंडित मरण हो मेरा ऐसा ही भाव हमारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

जग के सब पग ढूँढ लिए हैं सभी जगह अकुलाया हूँ,
तेरी निर्मल छाँव में गुरु शीतलता पाने आया हूँ।
अन्तर्मन शीतल कर दो बेटे ने यही पुकारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

शांत दिव्य छवि गुरुवर की जो निर्विकल्प उपकारी हैं,
ज्ञान दिवाकर क्षमामूर्ति और रत्नत्रय के धारी हैं।
रत्नत्रय का संबल दे दो वंदन बारम्बारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

मन सौरभ सुरभित हो उठता गुरुवर का जब ध्यान करूँ,
आलोकिक छवि निरख निरख कर भक्ति नीर में स्नान करूं।
शांति छवि जो आन बसी तो चमका भाग्य सितारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

निश्चित है कि गुरुवर तुमको आगे बढ़ते जाना है,
कर्म आठ का बंध छुड़ाकर अजर अमर पद पाना है।
मोक्ष डगर में साथ ले चलो मुझे तेरा ही सहारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

श्रद्धा भक्तिभाव से गुरुवर तेरे गुण को गाते हैं,
आत्मोन्नति के हेतु गुरुवर चरणन न अर्घ चढ़ाते हैं।
पूज्य पुरुष की पूजा करना पूज्यपने के द्वारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

क्या अच्छा क्या बुरा है जग में नहीं इनसे कुछ नाता है,
जो नर भक्ति भाव से आता वो सब कुछ पा जाता है।
जो भी मेरे पास में है वो अब कुछ दिया तुम्हारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

जाने छाला एवं उनके उपचार

शरीर के भीतर अत्यधिक गरमी होने के कारण कभी-कभी मुख के भीतर जीभ तथा होठों पर छाले हो जाते हैं। इससे रोगी को बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। भारतीय चिकित्सा पद्धति में इसका उत्तम उपाय उपवास तथा नाभि में तेल लगाना है। किन्तु आज के लोग इस पद्धति को न मान शीघ्रता से चिकित्सक के पास पहुँच जाते हैं। यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि कुछ रोगों को छोड़ छालों का उपचार शरीर स्वयं ही कर देता है। डॉक्टरों का कहना है पेट की खराबी के कारण छाला हो जाता है। हमारी लार में पाचक रस (एन्जाइम) प्रोटीन, कार्बोहाइट्रेट इत्यादि मिलकर एक मिली जुली लार बनाते हैं जो पाचन क्रिया को सक्रिय करती हैं। पेट खराब होने के कारण मुँह की लार ग्रंथियों का ठीक से लार न बनाना हो सकता है। हम एक निष्कर्ष पर अवश्य पहुँचे कि पेट और लार का सम्बन्ध छालों से अवश्य है। छाले मुख्यतया निम्न प्रकार के होते हैं-

- ❖ प्रलीम- इस प्रकार के छालों में होठों के कोनों पर छाले (फिशर्स मी) होना तथा होठों का कुछ मोटा हो जाना है। यह छूत का रोग है तथा अधिकतर स्कूलों, काराग्रहों और नवजात शिशुगृहों में होता है। उसकी अवधि १४ से २१ दिन है। सफाई ही सर्वोत्तम चिकित्सा है। साफ पानी पीना, सफाई रखने से यह रोग अपनी अवधि के पश्चात् स्वयं ही ठीक हो जाता है।
- ❖ फोडिस- होठों के ऊपरी तथा निचले हिस्से पर सफेद या पीले द्रव्य के छाले हो जाते हहैं। यह रोग श्लेष्मा (कफ) के दूषित होने से होता है। केवल व्यस्कों को होता है। छाले मुख के भीतर एक ही रेखा में आखिरी ढाढ़ों (मोलर) तक हो जाते हैं। इस रोग की भी कोई चिकित्सा नहीं है। सात दिन में यह स्वयं ठीक हो जाता है।
- ❖ चिलाइटिस यह रोग प्राय: निचले होठों को विकृत करता है। इसमें एक छोटे बीज की तरह नुकीले छाले हो जाते है। इस रोग का कारण अज्ञात है और यह स्वयं ही ८-१० दिन में ठीक हो जाता है।
- ❖ फैरोड जीभ- इस तरह के छालों में जीभ पर गहरी पीली, सफेद मैल की परत जम जाती है तथा जीभ के मध्य एक खाई जैसी दरार हो जाती है। उपवास करने तथा नीम या बबूल की दातुन करने से रोग ठीक हो जाता है।
- ❖ काली जीभ- इस तरह के छालों में भी जीभ का रंग काला, भूरा या पीला हो जाता है। ऐसा लगता है जैसे कोई बाल जीभ से चिपका है। स्वाद बिगड़ जाता है। इस रोग का भी निश्चित कारण ज्ञान नहीं।
- ❖ पकेक- जीभ के उपरी मध्य भाग तथा किनारों पर छोटे-छोटे जो सुई की नोंक के आकार के होते हैं। ये लाल भी होते हैं तथा इनमें द्रव्य भी हो सकता है। कभी-कभी ये छाले आध इंच तक के आकार के हो जाते हैं। ५ से १५ दिन तक ये छाले जीभ के मध्य भाग से तथा फिर किनारों से स्वयं ही गायब हो जाते हैं।
- ❖ ल्युकोपलाकिया- तम्बाकू, जर्दा, गुटका, मद्यपान करने वाले वयस्कों को यह रोग अधिक सताता है, हालांकि इसका कारण सिफलिस रोग भी हो सकता है। अत्यधिक जलन लिए ये छाले मसूड़ों को भी नहीं छोड़ते और कभी-कभी तो मुख की भीतरी सतह पर चकते से भी हो जाते हैं। मध्यम आयुवर्ग में यह रोग अधिक होता है। यह स्वयं ठीक होता और इसकी चिकित्सा आवश्यक है।

छालों से बचने के लिए उचित आहार तथा सफाई आवश्यक है। नहाने के पश्चात् नाभि साफ कर उस पर अंगुली से तेल लगा लें, मिर्च मसाला का सेवन न करें। मौसमी सब्जी एवं फलों का ही सेवन विशेष होना चाहिए। कॉफी, कच्चा प्याज, लहसुन तथा हींग एवं मांस मछली अण्डे का प्रयोग न करें। पानी खुब पीएँ। कई बार गर्म दवाइयों को अधिक मात्रा में खाने से भी छाले हो जाते है।

अब जाने उन छालों का किस प्रकार से उपचार कर सकते हैं-

- ❖ छोटी हरड़ को बारीक पीसकर छालों पर लगाने से मुँह तथा जीभ के छालों से छुटकारा मिलता है। दवा दिन में २-३ बार लगाएँ।

- ❖ गृहस्थ श्रावक शाम के भोजन के पश्चात् एक छोटी हरड़ चूसें इससे आमाशय और आंतों के दोषों के कारण महीनों ठीक न होने वाले मुँह व जीभ के छाले ठीक होते है, पाचक भंग शाक्तिशाली बन जाते हैं और पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।
- ❖ तुलसी की ५-६ पत्तियाँ नित्य सुबह शाम चबाकर ऊपर से २ घूंट पानी पीये। मुंह की दुर्गन्ध भी दूर होता है तो छाला भी।
- ❖ बार-बार मुंह में छालें होते रहते हैं, उन्हें टमाटर अधिक खाना चाहिए। शीघ्र लाभ के लिए टमाटर के रस में ताजा पानी मिलाकर कुल्ले करने से मुँह, होठ और जीभ के छाले दूर हो जाते हैं।
- ❖ जायफल को दूध में घिसकर लगाने से मुंह के दाग ठीक हो जाते हैं।
- ❖ गाय के दही के साथ एक केला खायें।
- ❖ घी १० ग्राम, कपूर ३ ग्राम गरम करके छालों पर लगाने से फायदा होता है।
- ❖ गर्म पानी से कुल्ला करने से भी छाले मिटते हैं।
- ❖ भोजन के पश्चात् गुड़ चूसे लाभ मिले एवं हाजमा भी हो।
- ❖ मुनक्का १० नग भिगोंकर खावें या ताजे अंगूर खावें तो छाले मिटें।
- ❖ तवे की कालास छालों पर लगावें तो छाले मिटें।
- ❖ चमेली के पत्ते, गिलोय, जवासा, हल्दी और त्रिफला का काड़ा में शक्कर की चासनी मिलाकर गरारे करने से मुख के छाले तथा धाव दूर हो जाते हैं।
- ❖ तरबूज के छिलके जलाकर लगाने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।
- ❖ मुलेठी को मुँह में रखने से भी मुंह के छाले मिटते हैं।
- ❖ शहतूत का रस पिलाने से गले के छाले मिटते हैं।
- ❖ पीपल को बारीक पीसकर मिश्री की चासनी में मिलाकर जीभ पर लगाने से लार आकर छाले मिटते हें।
- ❖ बेर के पत्ते के काढ़ा का कुल्ला करें लाभ मिलेगा। उपर से इलायची तथा मिश्री लगाना चाहिए।
- ❖ लाल मिर्च खा लार को गिराने से छाले दूर होते हैं।
- ❖ २-३ लोंग प्रतिदिन चबाने से वायु के छाले मिट जाते हैं।
- ❖ आंवलों के पत्ते का काढ़ा अथवा जामुन के नरम ताजे पत्तो का काढ़ा का कुल्ला करने से छाले ठीक होता है। इन नुस्को का प्रयोग कर छालों से लाभ निजात पा लें।

हंसना मना हैं

1. **मुनि विकौशल सागर जी**- नमोस्तु आचार्य श्री, प्रथमानुयोग का शास्त्र चाहिए।
   आचार्य श्री - हमारे पास नहीं है मंदिर जी में दिखवा लो।
   मुनि विकौशल सागर जी - आ.श्री आप पूँछ लीजिए किसी के पास हो तो।
   आचार्य श्री- हम पोस्टमेन का काम नहीं करते हैं।
2. **आ.श्री**- बहनें चौके में फल बनाती हैं वो भी सामने
   मीना दीदी- आ.श्री बड़े-बड़े पीस थे तो चम्मच से कर रहे थे।
   आ.श्री - पूजा किससे करती हो।
   मीना दीदी- चम्मच से (दीदी का नाम पूजा था)

बा.ब्र.रूवी जैन, शाहगढ़

आज प्रत्यक्ष देखा

अभी तक मैंने सुना था ऋषि मुनि होते थे वे संपूर्ण जगत को कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते थे प्राणी मात्र के लिए हित का उपदेश देते थे। अहर्निश परमार्थ की साधना करते थे। लेकिन जिस दिन परम श्रद्धेय गणाचार्य विरागसागर जी गुरुदेव राँची आये उस दिन ससंघ आपके दर्शन कर मुझे असीम हर्ष हुआ। आज मेरा जीवन सार्थक हो गया। यहाँ एक मुनिराज की सल्लेखना समाधि देखने का भी अवसर मुझे प्राप्त हुआ। शास्त्रों में सुनते तथा पढ़ते थे कि ऋषि मुनि समाधि लेते थे यहाँ उसे प्रत्यक्ष देख सकी।

आप इस धरती पर त्याग-तपस्या के हिमालय तथा सद्गुणों के सागर है। मेरी इच्छा है आप राँची में और रूके ताकि हम सभी को और अधिक धर्मलाभ प्राप्त हो सके।

श्रीमती आशा लकडे मेयर राँची

आनंद चातुर्मास से बढ़कर

रांची से अभी तक कई साधुसंघों का पदार्पण हुआ कई चातुर्मास भी समय-समय पर सम्पन्न हुए किन्तु पूज्य गणाचार्य विरागसागर जी गुरुदेव के ससंघ आगमन से तथा सात दिन के अल्प प्रवास में ही जो आनंद आया उतना तो चातुर्मास के चार महीनों में भी नहीं आया।

श्रीमती विनीता जैन रांची

धर्म की प्यास जगाई

रांची में प्राय: संघों का आवागमन होता रहता है लेकिन परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज ससंघ का आगमन रांची के इतिहास में प्रथमबार हुआ। संघ के प्रवास में यहाँ की समाज का उत्साह देखते ही बना। यूँ तो मुझे लग रहा था इतना बड़ा संघ है कहीं व्यवस्था में कोई कमी न आये, साथ ही कई परिवारों में शादी विवाह होने से समाज में व्यस्थता भी थी किन्तु गुरुवर के प्रवास में भक्त ऐसे खिचे मानों चुम्बकीय आकर्षण ही उन्हें अपनी ओर खींच रहा हो। इन सात दिनों में सुबह शाम एवं दोपहर का कोई समय ऐसा नहीं था जब मंदिर में भक्तों की भीड़ न लगी हो। अपने नगर में गुरुवर का आगमन कराकर मैं अपने मंत्रीपद को सार्थक और सफल मानता हूँ और गुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ कि हे गुरुदेव आपने इन सात दिनों के प्रवास से समाज में जो धर्म की प्यास जगाई है उसे रांची चातुर्मास कर तृप्त भी करना है। अत: समस्त रांची समाज की ओर से मैं आपके श्री चरणों में चातुर्मास का निवेदन करता हूँ।

श्रीमान संजय कुमार जैन, महामंत्री रांची समाज

मुझे प्रभावित कर लिया

जब रांची में परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य गुरुदेव श्री १०८ विरागसागर जी महाराज की शिष्या परम पूज्य आर्यिका विभाश्री माताजी का चातुर्मास हुआ था। तब दो बार मुझे आपके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आपके दर्शन से उसी समय मुझे जो आनंद हुआ था वह वर्णातीत है। आपके सहज-सरल स्वभाव एवं वात्सल्य ने उसी समय मुझे प्रभावित कर लिया था। उसी समय से मेरे मन में आचार्य श्री को रांची लाने के भाव हुये थे किन्तु इतना प्रबल पुण्य हमारी सत्ता में नहीं था। आज निश्चित ही हमारे पूर्व पुण्य का उदय आया है जिससे चलते-फिरते समवशरण के दर्शन हमें प्राप्त हुए है। मेरी भावना है गुरुदेव उदयगिरि खण्डगिरि की यात्रा कर पुन: रांची पधारें और हम सभी को चातुर्मास का लाभ प्रदान करें।

रांची अध्यक्ष श्रीमान पद्मकुमार छाबड़ा

आपके नाम की मुष्ठी रखता हूँ

अभी तक हम सभी आपके दर्शन के इंतजार में थे हम महादेव के मंदिर में रहकर भगवान की आराधना, पूजा करते हैं। यहाँ सर्वाधिक मंदिरों में दिगम्बर मुद्रा के भगवान विराजमान थे हम सभी उनकी उपासना करते हैं आपके नाम की मुष्ठी

रखकर हम प्रतिदिन पूजा करते हैं आज बड़े भाग्य से आपके दर्शन हमें प्राप्त हुए हैं हम धन्य, महाधन्य हो गये हैं आप हमारे मंदिर में चरण रखकर उसे पवित्र करने की कृपा करें।

खणेन्द्रनाथ पाण्डे संत देवलटांड मंदिर

बुण्डु के इतिहास में प्रथम बार इतना बड़ा संघ एवं पूज्य गुरुदेव का आगमन हुआ जिससे मुझे ऐसा लगा मानों अनायाथ ही स्वर्गों की निधियों हम बुण्डु वालों को प्राप्त हो गई हो। हमारे स्कूल के १००० बच्चों ने भी गुरुवर के दर्शन एवं प्रवचन सुन जीवन को धन्य किया।

श्रीमती सुभाष जैन, बुण्डु

ओरीजनल जैन हैं

सबसे पहले परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज को मेरा बारम्बार नमन नमोस्तु। आपने हमारे ऊपर यहाँ पधार कर बहुत बड़ा उपकार किया है। यूँ तो हम सभी जन्म से जैन है हम परिवर्तित जैन नहीं ओरीजनल जैन हैं हमारे गोत्र तीर्थंकर भगवानों के नाम पर हैं। यहाँ हम सराक का २५० वर्ष पूर्व इतिहास मिलता है। हाँ ये बात अलग है कि हम अपनी क्रिया चर्या संस्कारों को भूल गये थे लेकिन आपके यहाँ पधारने से हमें यह विश्वास है कि हम जरूर अपने संस्कारों से अवगत होंगे और उन्हें चर्यासाथ करेंगे।

श्रीमान रमेश जी

आपकी कृपा बनी रहे

हमारे पूर्वजों ने जो त्याग बलिदान किया था उसकी कथा में सुनाता हूँ हमारे पूर्वजों ने वन, जंगलों में रहना पसंद किया लेकिन अपने धर्म को छोड़ना पसंद नहीं किया। आज हम लोग जो कुछ भी सीखें हैं वह विराग सागर जी के यहाँ पदार्पण से सीखें हैं। फिर भी जो ज्ञान हमें होना चाहिए वह हमारे अंदर नहीं हैं क्योंकि हमारे इस क्षेत्र में साधु-संतों का आवागमन बहुत कम अथवा यूँ वहें होता ही नहीं है। मुझे बड़ी खुशी हुई जब मैंने सुना गुरुदेव ससंघ हमारे क्षेत्र में आ रहे हैं आपकी कृपा हमारे ऊपर हो, हमें संतों का सान्निध्य मिलता रहे ऐसी भावना भाता हूँ।

संचालक गौराम मांझी

कुल देवता के रूप में पूजते रहे

सराक समाज जन्मत: जैन है किसी कारण इनके पूर्वजों को धर्म छोड़ने पर मजबूर किया गया लेकिन उन्होंने धर्म छोड़ना स्वीकार नहीं किया फल स्वरूप उन्हें जंगलों में आदिबासियों के बीच में रहकर जीवन व्यतीत करना पड़ा। जिसके कारण वे सारे संस्कारों को भूल गये, उनका प्रमुख कार्य खेती किसानी ही रह गया। साथ ही इस क्षेत्र में कभी कोई संत भी नहीं आये जिससे वे देव शास्त्र, गुरु को भी भूल गये किन्तु भगवान पार्श्वनाथ को कुल देवता के रूप में पूजते रहे किन्तु अब हमें विश्वास है कि सराक समाज का निश्चित रूप से उद्धार होगा।

कमल कुमार जैन, महामंत्री

मैं धन्य हो गया

आप मेरे इस छोटे से आश्रम में पधारे यह हमारा बड़ा सौभाग्य है। आपने हमारे बच्चे एवं हम सभी को सदोपदेश दिया इसके हम बड़े कृतज्ञ हैं। हम आपको ज्यादा कुछ तो दे नहीं सकते ये छोटी सी भेंट (विस्किटों के पैकिट तथा ब्रेड आदि सामग्री देते हुए) स्वीकार कीजिए। (पूज्य गुरुदेव ने कहा- इसे आप बच्चों में बांट दें दिगम्बर जैन संत दिन में मात्र एक ही बार शुद्ध प्रासुक आहार एवं यानी ग्रहण करते हैं यह बात सुन उन संत ने कहा) अहो! मैं तो भूल गया था आज संपूर्ण विश्व में दिगम्बर संतों की त्याग-तपस्या विख्यात है। आपके दर्शन कर मेरा जीवन सफल हो गया मैं धन्य हो गया हूँ।

प्रणवानंद विद्या मंदिर के संचालक संत स्वामी भूतेसानन्द जी

वात्सल्य पुंजगणाचार्य प.पू. १०८ श्री विरागसागर जी महाराज -

मेरी दृष्टि में

भगवान महावीर के बाद अनेक महान आचार्यों ने श्रमण संस्कृति को अपनी साधना व आराधना से नये आयाम दिये है, जिनमें- आचार्य कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, विद्यानिन्द, पुष्पदन्त, भूतबलि, भद्रबाहु, नेमीचन्द्र, अकलंक-निकलंक आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। ये सभी श्रमण सन्त भगवान महावीर के प्रतिनिधि के रूप में स्मरण किये जाते हैं।

इसी गौरवमय परम्परा में वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री १०८ विमलसागर जी महाराज से दीक्षित प.पू. गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज का ३९वाँ वर्षायोग १०८ पिच्छी के साथ ठीक १८ वर्ष बाद मधुवन शिखर जी में २०१८ में हो रहा है। ऐसा विशाल संघ मानो समोशरण की रचना... है।

आचार्य श्री बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी व जैन समाज के सिरमौर है, नि:सन्देह आपने अपनी औदारिक काया को तपा-तपा कर समाज व राष्ट्र तथा धर्म के लिये जो बहुमूल्य सेवाएँ प्रदान की है वह कर रहे है उससे समाज व राष्ट्र सदैव ऋणी रहेगा। आप सामाजिक झगड़ों में कभी दखल नहीं देते। ज्ञान ध्यान आपकी प्रतिदिन की चर्या है। अंजुलि भर लेकर दरिया भर लौटा देना आपका स्वभाव है। समूची मानव जाति को एक सूत्र में पिरोकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के स्वप्न को साकार करना आपका जीवन उद्देश्य है। एक धर्म विशेष के आचार्य होकर भी आप में समन्वय वादी विचार धारा कूट-कूट कर भरी है। आप सबके है कहीं कोई जाति गत भेदभाव नहीं है। आप समत्वसाधक भेद की रेखा से परे है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप जैसे श्रेष्ठ आचार्य को पाकर श्रमण परम्परा चहुमुंखी विकास को प्राप्त हुई है। अपने कठिन परिश्रम एवं उत्कृष्ठ साधना से जो ज्ञानार्जन किया उससे सारा जैन जगत आश्चर्य चकित है। आपकी विशिष्ट प्रतिभा व प्रभावना के कारण आपकी गणना देश के शीर्षस्थ जैनाचार्यों में की जाती है। जगह जगह धार्मिक आयोजनों के माध्यम से आपने जो पीढ़ी के नवांकुरों को जैनेत्व की कसौटी, जीवन पद्धति और जैनेत्व के संस्कार दे रहे है, वह समाज के लिए अमूल्य धरोहर है।

जैन मान्यता में आचार्य परम इष्ट है। अग्रगामी होकर भी संघ को साथ लिये दिशा बोध किये रहते हैं। आचार्य विकासमान अवस्था है, जहाँ गति शीलता है, सतत प्रवाह है, निरन्तर जागरण की अन्तयात्री है एक क्षण का भी प्रमाद स्खवलन है। आचार्य श्री बंधते नहीं है, बांधते भी नहीं है। आप संघ के लिए शीर्ष पर होकर भी अपनी सत्ता में निर्वाध व निर्ग्रन्थ होते है। आचार्य श्री सूर्य की तरह निरपेक्ष व सबके लिए समान रूप से प्रकाश मान रहते है। सूर्य की प्रतिबद्धता किसी के साथ नहीं होती। आपका वात्सल्य असीम है सूर्य की तरह यह मैत्री आत्म साक्षात्कार की अभिव्यक्ति है। आप अकिंचन है इसी से सर्वश्रेष्ठ है, त्याग और ग्रहण दोनों समानहुए रहते हैं। संकल्प और कामना से इस प्रकार शून्य (मुक्त) हुए रहते हैं कि जगत के लोक व्यवहार करते हुए भी वास्तव में कुछ नहीं करते है, यही आचार्यों का उत्तराधिकार होता है। आचार्य श्री अमृत कलश से अपने भरे हुए है। आध्यात्मिक होना ही क्रान्ति कारी होना है, जहाँ केवल होकर रहना होता है। विशिष्टता का उन्मूल न होकर समग्र के लिए समदर्शी-समजीवी हो जाते है। आचार्य श्री बाहरी आचरण नहीं है, आप अन्त क्रान्ति के प्रणेता है, जहाँ अन्तर्मन का सम्पूर्ण निवारण हुआ करता है, आप जीवन को उसकी वस्तुगत सत्ता में देखते हैं। आचार्यश्री संघ के लिये होकर, वापस लौटते है, जहाँ वर्तमान में भी अतीत को जाग्रत करना होता है। प्रतिक्रमण ऐसी ही प्रक्रिया है, जहाँ जागरुक होकर उन कारणों को खोजना और निरस्त करना होता है। अपनी दैनिकी क्रिया कलाप में ऐसी अनेक स्थितियाँ बनती है जो अत्यन्त सूक्ष्म होकर भी मानसिक धरातल पर जटिल होती है यह ऐसा सत्य है जो हर जीवन में प्रतिपल घटित होता रहता है। प्रतिक्रमण अपने में वापस लौटना, यह क्रम निरन्तर है जो सबके लिए है। प्रतिक्रमण विनयशीलता का प्रारम्भ है, निर्ग्रन्थ होने का आधार है, सभी ग्रन्थियों से मुक्ति के लिए प्रतिक्रमण है। आचार्यश्री बांधते नहीं है मार्ग बोध कराते है सारे सम्बन्ध परछाई की तरह है, प्रायश्चित देते है, अपने को पूरी तरह खाली कर लेने निरावरण होने की प्रेरणा देते है। आचार्यश्री धर्म की बुनियाद है, स्वयं आकिंचन होकर आकिंचन को उठाते है, सहलाते है दुलारते है

आपका कृत्तित्व दुर्लभ पारसमणि समान है। प्रकृति के प्रांगण में प्रकृतिमय जीने के विज्ञान में निष्णात आचार्यश्री भारतीय दर्शन में निर्ग्रन्थ की जो परिभाषा दी गई है, आप उसके जीते जागते स्वरूप है।

श्रमण संस्कृति के चलते फिरते आप गणाचार्य ससंघ की चर्या शोध का विषय है। आगामी पीढ़ी जो सुविधागामी जीवन व्यवस्था की ओर उन्मुख है, उनके लिए आ. श्री ससंघ एक खुले विश्वविद्यालय के समान है, आपके जीवन दर्शन को पढ़ना एक शोध का विषय है। धन्य है आपकी निर्वस्त्र, निर्वासना, निस्पृहीभाव, आत्मलीनता संस्कृति के इन विजेता को नमन्।

इस पदयात्रा की श्रंखला में आपने पूरे भारत की यात्रा करते हुए १८ वर्ष बाद सम्मेद शिखरजी में पुन: चातुर्मास में विशाल संघ सहित सान्निध्य प्राप्त हुआ है तब से अनुभव हुआ कि यह पंचमकाल, चतुर्थकाल में परिवर्तित हो गया हो। आपको लख कर ऐसा लगता है मानों वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति हैं।

चाहे कोई शिशु हो या जवान हो, नेता हो या अभिनेता अथवा सामाजिक प्राणी सभी को समान रूप से आप आशीर्वाद व स्नेह प्रदान करते है। मैं तो अपना अहोभाग्य मानता हूँ कि मुझे आपका चरण सान्निध्य प्राप्त हुआ व आपका त्यागमयी जीवन देखने व जानने का अवसर प्राप्त हुआ।

आपकी पावन वाणी सत्यम, शिवम्, सुन्दरम् की विराट अभिव्यक्ति तथा वात्सल्य मुक्ति द्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है। धर्म, दर्शन, कर्म, संस्कृति व अध्यात्म का पावन पंचामृत आपकी वाणी से निसृत होता है।

सत्यमेव साधना के जीवन्त प्रतिरूप गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज मानवता की कल्याण कामना के लिए वह अक्षुण्य विभूति है जिसका अन्य कोई विकल्प नहीं है। आचार्य श्री ने जीवन को संयमित रखने, जीवन की सत्यता को पहचानने और उसे साधन बनाकर परमसत्य को पाने का सन्देश दिया है।

आ. श्री का व्यक्तित्व बहुआयामी है, आपके व्यक्तित्व में दर्शन की अनुभूति ज्ञान की उपयोगिता, चारित्र की परिपक्वता, योगी की समता, माँ की ममता, योद्धा की क्षमता शिष्य की विनम्रता, गुरु की गम्भीरता शिशु की सरलता और वैरागी की निष्पृहता के साक्षात दर्शन होते हैं।

वैसे ह्री हूँ मैं, उस बालकवत जिसे साहित्यिक शब्दों का ज्ञान नहीं है फिर भी भक्ति से, अपने भावों की तूलिका से शब्द प्रसून गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज को अर्पण कर रहा हूँ। मैंने कोई शब्द कोश का अध्ययन नहीं किया है, अत: मेरे पास शब्दों की सीमा है, यह मेरी विवशता जानकर मुझे आप अपनी सहानुभूति देंगे। यह वही है, जिसे मैंने लिखा है। अभी अधूरा है... निरन्तर जीवन के अन्तिम क्षणों तक लिखता रहूँ।

आप श्रमण समाज के सूर्य है, आपका जीवन ज्ञान दिवाकर की रश्मियों से आलोकित है आपका सामीप्य कोमलता का पालना तथा शीतलता व मधुरता का सरोवर है।

ऐसे निर्ग्रन्थ को क्या कहें....
बसइतना..... आप महाग्रन्थ हो।
इमने आपके कई अर्थ लगाये,
परवह अर्थ नहीं लगा जो मूल है,
इसलिए यह अनुभव हुआ,
शब्द जाल में आपको बांधना बहुत बड़ी भूल है।

ऐसे गणाचार्य प.पू. श्री १०८ विरागसागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन्

गुरु बिन माला फेरना, बिन देना दान।
गुरु बिन अप-तप व्यर्थ है, कह गये वेद पुराण।।

ब्र. राजकुमार जैन, मधुवन शिखरजी

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका **दोनों प्रकार के निश्चय सम्यक्त्व को पुनः स्पष्ट कीजिए?**

समाधान- ध्यान दीजिए-

१. साधन रूप निश्चय सम्यग्दर्शन, जिसमें वीतराग चारित्र नहीं पाया जाता है।

२. साध्य रूप निश्चय सम्यक्त्व, जो वीतराग चारित्र के अविनाभावी होता है।

शंका- **साधन रूप निश्चय सम्यक्त्व में क्या वीतराग चारित्र नहीं पाया जाता है, किन्तु हमने तो ऐसा सुना है कि उसे अनंतानुबंधी चार के अभाव में स्वरूपाचरण चारित्र पाया जाता है?**

समाधान- आपने भले ही सुना हो, पर जैनाचार्य प्रणीत आगम में उसे स्वरूपाचरण नहीं किंतु सम्यक्त्वाचरण चारित्र माना है।

यथा देखो- **(चा.पा.गा. ७-८)**

णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्विदिगिंच्छा अमूढदिट्ठीय।
उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल्ल पहावणा य ते अट्ठ।। ७।।

अर्थ- निः शंकित, निः काक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना ये आठ सम्यक्त्व के गुण हैं।

तं चेव गुणविसुद्धं जिणसम्मत्तं सुमुक्खठाणाय।
जं चरइ णाणजुत्तं पढमं सम्मत्तचरणचारित्तं।। ८।।

अर्थ- निः शंकितादि गुणों से विशुद्ध वह सम्यक्त्व ही जिन-सम्यक्त्व कहलाता है तथा जिन-सम्यक्त्व ही उत्तम मोक्ष रूप स्थान की प्राप्ति के लिये निमित्तभूत है। ज्ञान सहित जिन-सम्यक्त्व का जो मुनि आचरण करते हैं वह पहला समयक्त्व-चरण नामक चारित्र हैं।

शंका- स्वरूपाचरण चारित्र को तो आप ऊपर देख ही चुके हैं अतः स्वरूपाचरण चारित्र को भी समझें।

समाधान- सम्यक्त्वाचरण चारित्र को तो आप ऊपर देख ही चुके हैं अतः स्वरूपाचरण चारित्र को भी समझें।

शंका- **स्वरूपाचरण चरित्र किसे कहते हैं?**

समाधान- देखें (प्र.सा./त.प्र.गा. ७)

स्वरूपेचरणं चारित्रं स्व समय प्रवृत्तिरित्यर्थः।

अर्थ- स्वरूप में चरण करना चारित्र है, स्वसमय में प्रवृत्ति करना इसका अर्थ हैं।

शंका- **स्वसमय में प्रवृत्ति, इसका अर्थ है? स्वसमय किसे कहते हैं?**

समाधान- स्वसमय को निम्न प्रकार से समझना चाहिए-

१. **परमप्पा सगसमयं (र.सा.गा.१४०)**

परमात्मा स्वसमय है।

२. **आद सहावम्मिठिदा ते सगसमया मुणेदव्वा (प्र.सा.गा.९४)**

अर्थ- जो आत्म स्वभाव में लीन हैं वे स्वसमय जानना चाहिये

३. **जीवो चरित्त दंसण णाणट्ठिउ तं हि ससमयं जाण।। (स.सा.गा.२)**

अर्थ- हे भव्य! जो जीव दर्शन, ज्ञान, चारित्र में स्थित है वह निश्चत से स्वसमय जानो।

इस प्रकार स्वसमय में प्रवृत्ति करना ही स्वरूपाचरण चारित्र है।

शंका- **उपर्युक्त प्रकार से आत्म स्वरूप में लीन कौन होता है?**

समाधान- निर्ग्रंथ मुनि/योगी ही आत्म स्वरूप में लीन होकर निर्वाण को प्राप्त करते हैं। देखें (मो.पा.गा. ८३)

णिच्छय णयस्स एवं अप्पा अप्पम्मि अप्पणे सुरदो।
सो होदि हु सुचरित्तो जोइ सो लहइ णिव्वाणं।।

अर्थ- जो आत्मा, आत्मा ही विषै आप ही के अर्थि भले प्रकार रत होय है। सो योगि ध्यानी मुनि सम्यक् चारित्रवान भया संता निर्वाण कूं पावे है।

उपर्युक्त कथन का तात्पर्य यह है कि अविरत व देशव्रत गुणस्थान में स्वरूपाचरण/वीतराग चारित्र नहीं पाया जाता है।

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमशः शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- **१.** **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

विराग सेतु

वावीस-विरागो

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गों में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

विरागो मुणी अज्ज संतुट्ठ माणेण,
मुणिं वच्छलं णेदि णंदण्ण भावेण।
जएज्जा मुणीणाध! वंदेज्ज जाएण,
णमोत्थु वि तुम्हं च सूरिं पणामेण।। १।।

वे विरागसागर मुनि आज आचार्य के मान से संतुष्ट हुए। उन्होंने आचार्य श्री के वात्सल्य भाव को धारण किया। उनके नन्द भाव से अपने मुनि पद को सम्मानित समझा। वे हे मुनिनाथ! ऐसा संबोधित करते हुए जय करते, उनका ज्ञातृभाव से वंदन करते। आपको नमोऽस्तु करते हैं।

दोणस्स खेत्त-पुर-वासि-सदस्स-सव्वे,
जुत्ता णमोत्थु कुण संति णिवेएंति।
खेत्ते वि वासचदुमास-कुणंत-हेदुं,
आदेसदे विमलसूरि-पणम्म-पुव्वं।। २।।

इधर द्रोणगिरि के निवासी एवं सभी सदस्य गण उन्हें नमोऽस्तु करते, फिर क्षेत्र पर चातुर्मास हेतु निवेदन करते हैं। तब विरागसागर मुनि उन्हें आचार्य विमलसागर को प्रणाम करके स्वीकृति प्रदा करते हैं।

आदेस-पत्त-विमलस्स विराग-साहू,
दोणं पवसेदि झडित्ति सुसाहणाए।
कूडे वि पव्वद सिरे बर-झाण-हेदुं
सज्झाय-सम्म-मणणं करिदुं चरेदि।। ३।।

वे विरागसागर आचार्य विमलसागर के आदेश को प्राप्त होते हैं। वे अपनी सम्यक् साधना के निमित्त शीघ्र ही द्रोणगिरि में प्रवेश करते हैं ताकि द्रोणगिरि के पर्वत शिखरों पर उत्तम ध्यान कर सकें।

गच्छेदि जत्थ तध माणव-ओह-दंसे
आगच्छिदूण पुरसंमुहगो तदो तं।
पक्खालणं च चरणं कुणएंति सव्वे
संगे चरेंति जयवंत-विराग साहुं।। ४।।

वे जहाँ भी जाते वहाँ मानव समूह देखकर संमुख आ जाता, फिर पुर में उनके चरण प्रक्षालन करते और जनसमूह जयकारा करते हुए विरागसागर के साथ में चल पड़ते हैं।

बुंदेल-खंड-बहुभाग - चरंत-साहू
पत्तेंति आदर-सदा बहुमाण-दाणं।
रम्मेंति अत्थं परमागम-झाण-हेदुं
सड्ढा-जणाण सुद-णाण-गुणीण माणं।।५।।

इस बुंदेलखण्ड के अधिकांश भाग में साधु अपनी चर्या करते हैं, वे यहाँ आदर एवं बहुमान को पाते हैं। वे यहाँ परमागम के ध्यान हेतु रमते हैं। यहाँ श्रुतज्ञान के गुणी जनों का मान भी होता है।

अस्सिं धराइ धण-धण्ण-अभाव-तित्थं,
तत्तो वि सावग-जणा वि अदित्थ-दाणं।
कुव्वेंति काय-मणसा धणसा वि णिच्चं
धण्णं कुणेंति इध जम्म-सदा पुणीदं।। ६।।

इस धरा पर धन-धान्य का अभाव है, फिर भी यहाँ श्रावक जन तो आतिथ्य दान मन, वचन, काय और धन से भी करते हैं। इससे वे अपना जन्म पवित्र एवं धन्य करते हैं।

मग्गे हि मग्ग-जय-संत-मुणीण गुंजे
दोणागिरी-सिहर-झाण-विमुत्त-मूगं।
सद्देहि अज्ज झुणि-गुंज-पडिज्झुणी वि
तेसिं च सागद-सु-णम्म-तरु वि दंसे।। ७।।

मार्ग में जयकार मुनियों के शान्तभाव को उन्नत बनाती है। द्रोणगिरी के शिखर गूंगे ध्यान विमुक्त हो गए तभी तो आज जयकार शब्दों के साथ प्रतिध्वनि युक्त शिखर हो गए हैं एवं उनके स्वागत में मानो वृक्षावलियाँ भी झुक गई ऐसा प्रतीत हो रहा है।

दोणम्हि आगद-मुणीण सुआगदो वि
भव्वो हवेदि मणुजेहि पसण्ण-चित्तो।
बुंदेल-खेत इम-संत-सदा पुणीदो
अज्जेव अप्प मुणिवंत-जणेहि णंदो।। ८।।

द्रोणगिरी में आगत मुनियों का स्वागत भव्य होता है। मनुष्यों के द्वारा प्रसन्नता व्यक्त की जाती है कि बुंदेलखण्ड क्षेत्र इन संतों से सदैव पवित्र हुआ, पर आज अपने ही अपने क्षेत्र के मुनिवृंद जनों से तो अति आनंदित हुआ है।

इत्थं बडा-मलहरा-भगवा दु गामा
हीरापुरादि-बहु-खेत्त-जणा वि णिच्चं।
आगच्छएंति मुणिसेव किदुं च सव्वे
राजा-धणी सदगुणी बहुधा हि अत्थ।। ९।।

द्रोणगिरी में बड़ा मलहरा, भगवाँ, बड़ागाव, हीरापुर आदि के लोग सदैव आते हैं वे भी मुनियों की वैयावृत्ति करने के लिए। राजा, धनी, सद्गुणी आदि सभी प्राय: वैयावृत्ति के लिए आते हैं।

राजा दिणं पडिदिणं अणुसेवमाणो
धण्णं कुणेदि णिय-जम्म-कुलं च सव्वं।
सत्यं सुणेदि वयणं किद-कम्मलेहं
चिंतेदि अप्प-मणसे धरदे हि झाणं।। १०।।

यहाँ पर राजा भैया प्रतिदिन सेवा करते हुए अपने जन्म, अपने कुल आदि सभी को धन्य करते हैं। वे कृतकर्मों के योग्य शास्त्र वचन को सुनते हैं, वे उस पर मन से चिंतन करते तथा तदनुसार ध्यान धारण करते हैं।

क्रमश.....

मार्च माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	१.३.१९४८	हटा (दमोह) श्रमण श्री विश्ववीर सागर जी
जन्म दिवस	३.३.१९४६	पिटोरिया (म.प्र.), श्रमण श्री विश्वदक्ष सागर जी
दीक्षा दिवस	३.३.२००९	गिरनारजी (गुज.) ऐ. विश्वलोकेश सागर जी ऐ. विश्वतीर्थ सागर जी, ऐ. विश्वमित्र सागर जी।
जन्म दिवस	६.९.१९८४	इन्दौर, श्रमण मुनिश्री आस्तिक्य सागर जी श्रमण श्री प्रणीत सागर जी।
जन्म दिवस	७.३.१९५१	जबलपुर, श्रमण श्री अमृत सागर जी
दीक्षा दिवस	७.३.१९९५	श्री गिरारजी (म.प्र.) क्षु. विश्वपूज्य सागर जी
जन्म दिवस	७.३.१९७०	बीना (म.प्र.) श्रमण श्री विहर्षसागर जी महाराज
जन्म दिवस	८.३.१९५१	पाली (उ.प्र.) श्रमण श्री विश्वविद सागर जी
पुण्य तिथि	५.३.२०१४	खजुराहो (म.प्र.) आर्यिका विभालश्री माता जी
दीक्षा दिवस	८.३.२००९	गिरनार जी (गुज.) मुनि श्री विदाम्बर सागर जी, मुनिश्री विभास्वर सागर जी, मुनिश्री विश्वलोकेश सागर जी, मुनिश्री विश्वतीर्थसागर जी, मुनि श्री विश्वमित्र सागर जी, मुनिश्री विश्वास सागर जी
दीक्षा दिवस	१०.३.२०११	श्री सम्मेद शिखर जी, मुनि श्री संस्कार सागर जी
जन्म दिवस	१२.३.१९८४	डवरा (म.प्र.) मुनि श्री अप्रमित सागर जी
पुण्यतिथि	१३.३.२०१७	सागर (म.प्र.), आर्यिका विजयश्री माता जी
जन्म दिवस	१५.३.१९३३	समशाबाद (उ.प्र.) क्षु. श्री विश्वज्ञेय सागर जी
जन्म दिवस	१६.३.२०१५	श्रेयांसगिरि (म.प्र.) क्षुल्लिका विश्वशान्ताश्री माता जी, क्षुल्लिका विमोचना श्री माताजी, क्षुल्लिका विरोचनाश्री माताजी।
जन्म दिवस	१६.३.१९७८	सागर (म.प्र.) आर्यिका विदक्षाश्री माता जी
जन्म दिवस	१७.३.१९७७	गया (विहार) आर्यिका विकंपा श्री माता जी
दीक्षा दिवस	१७.३.१९४५	उदगांव (महा.) पू. आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज
पुण्य तिथि	१९.३.२०१४	छतरपुर (म.प्र.) आर्यिका विहंसश्री माताजी
जन्म दिवस	२०.३.१९५५	छपारा (म.प्र.) आर्यिका विनीतश्री माताजी
पुण्यतिथि	२१.३.२०१५	श्रेयांसगिरि, आर्यिका विशुभ्राश्री माताजी
जन्म दिवस	२२.३.१९६२	वंधाजी, मुनि श्री प्रवीर सागर जी
जन्म दिवस	२५.३.१९८५	सागर (म.प्र.) मुनिश्री आचरण सागर जी
जन्म दिवस	२६.३.१९९३	टीकमगढ़ (म.प्र.) मुनिश्री प्रणुत सागर जी
दीक्षा दिवस	२६.३.२०११	कोटा (राजस्थान) ऐ. विचिन्त्यसागर जी
जन्म दिवस	२७.३.१९७६	झुमरी तिलैया, मुनिश्री प्रांजल सागर जी
पुण्यतिथि	२९.३.२०११	भीलवाडा (राजस्थान) मुनि श्री विश्वशान्ति सागर जी
आचार्य पद	३१.३.२००७	औंरगाबाद (महा.) आ. विशुद्धसागर जी, आ. विभवसागर जी, आ. विभदसागर जी।
जन्म दिवस	३१.३.१९८१	भिण्ड (म.प्र.) आर्यिका विश्वास श्री माता जी

माघ मास के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

२० फरवरी २०१९	फाल्गुन कृष्ण १	षोडषकारण व्रत पूर्ण
२२ फरवरी २०१९	फाल्गुन कृष्ण ३	श्री पदम्प्रभु मोक्ष कल्याणक
२५ फरवरी २०१९	फाल्गुन कृष्ण ७	श्री सुपार्श्वनाथ जी मोक्ष कल्याण
२६ फरवरी २०१९	फाल्गुन कृष्ण ८	अष्टमी व्रत
१ मार्च २०१९	फाल्गुन कृष्ण १०	श्री ऋषभदेव ज्ञान, श्री श्रेयासनाथ जन्म तप कल्याणक
३ मार्च २०१९	फाल्गुन कृष्ण १२	श्री मुनि सुव्रतनाथ जी मोक्ष कल्याणक
५ मार्च २०१९	फाल्गुन कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत, श्री वासुपूज्य जी जन्म तप कल्याणक
११ मार्च २०१९	फाल्गुन शुक्ल ५	श्री मल्लिनाथ जी मोक्ष कल्याणक
१३ मार्च २०१९	फाल्गुन शुक्ल ७	अष्टान्हिका पर्व प्रारंभ, श्री चन्द्रप्रभु मोक्ष, रोहिणी व्रत
१४ मार्च २०१९	फाल्गुन शुक्ल ८	अष्टमी व्रत
१९ मार्च २०१९	फाल्गुन शुक्ल १३	आ. विमलसागर जी दीक्षा दिवस
२० मार्च २०१९	फाल्गुन शुक्ल १४	चतुर्दशी व्रत, अष्टान्हिका पर्व पूर्ण।

राष्ट्र-भावना

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

देश हमारा भारत प्यारा, सब देशों से न्यारा।
न्यारा! हाँ न्यारा!! भारत देश हमारा।।

बच्चे अच्छे पढ़े लिखें नित, उच्च श्रेणि में आवे,
सुखी रहें सब जीव जगत में, वर्षा शांति की पावे।
पावे! हाँ पावे!! वर्षा शांति की पावे।। भारत देश हमारा ।।१।।

सदाचारी हों देश के नेता, न्यायशील नीतिज्ञ,
शासक वा प्रशासक नित हों, कर्तव्यों के पालक।
पालक! हाँ पालक!! कर्तव्यों के पालक।। भारत देश हमारा ।।२।।

कृषक कृषि से इस धरती को, हरी-भरी लहरायें,
हर फसलों से भरा देश हो, शाकाहार अपनायें।
अपनायें! हाँ अपनायें!! शाकाहार अपनायें।। भारत देश हमारा ।।३।।

भारत के वे नोजवान जो, सरहद पर खड़े हैं,
संरक्षित हों सदा सभी वे, देश की रक्षा बढ़ावें।
बढ़ावें! हाँ बढ़ावें!! देश की रक्षा बढ़ावें।। भारत देश हमारा।।४।।

परमाणु की खड़ी मिशालें देश की शोभा बढ़ावे,
शक्तिशाली में भारत प्यारा प्रगति चहुदिश होवे।
होवे! हाँ होवे!! प्रगति चहुदिश होवे।। भारत देश हमारा ।।५।।

अहिंसा सत्य सदाचारमय, मैत्री सभी में जागे,
नशामुक्ति हो, स्वच्छ धरा हो, विराग भावना भायें।।
भायें! हाँ भायें!! विराग भावना भायें।। भारत देश हमारा ।।८।।

समाचार

त्रियोग आश्रम में हुआ गुरु भक्ति सभा का आयोजन

१ जनवरी २०१९ को त्रियोग आश्रम श्री सम्मेद शिखर जी मधुवन में प.पू. आचार्य श्री संभव सागर जी एवं प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में आशीर्वाद सभा का आयोजन किया गया। जिसमें महिला मण्डल कलकता द्वारा मंगलाचरण एवं बालिकाओं द्वारा भक्ति नृत्य की प्रस्तुति की गई। बाहर से आये अनेक समाज श्रेष्ठियों ने श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किये। आर्यिका पुनीत चैतन्यमती माताजी ने दोनों आचार्यों का पाद प्रक्षालन किया। आचार्य संभवसागर जी ने पू. गणाचार्य श्री को शास्त्र प्रदान किया एवं पू. गणाचार्य श्री ने पू. आचार्य श्री संभवसागर जी को शास्त्र भेंट किया। आर्यिका पुनीत चैतन्यमती माताजी ने अपनी कृति 'संस्कृति की अमूल्य धरोहर' आ. संभवसागर पू. गणाचार्य श्री, आचार्य धर्मभूषण जी, आर्यिका सुरत्न मती माता जी, को भेंट की श्रीमती सुमन जैन गया द्वारा दोनों आचार्यों के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की गई। दोनों आचार्यों की अष्ट द्रव्य से भक्ति के साथ पूजन सम्पन्न की गई। आर्यिका पुनीत चैतन्य मती माताजी ने अपने गुरुदेव के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित कर पू. गणाचार्य श्री के प्रति अपनी विनयांजलि में अपनी दीक्षा महोत्सव में उपस्थिति एवं पूरे वर्षायोग में व अभी तक पू. गणाचार्य श्री का आशीर्वाद एवं समस्त संघ का जो वात्सल्य मिला उसके लिये अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की पू. गणाचार्य श्री ने पू. आचार्य श्री संभव सागर जी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए उनका प्रेम वात्सल्य एवं मार्ग दर्शन जो अभी तक प्राप्त हुआ। वह हमेशा इसी तरह प्राप्त होता रहे ऐसी भावना प्रकट की। बालाचार्य श्री मोक्षसागर जी आर्यिका पुनीत चैतन्य मती माता जी का आज्ञा व समर्पण की भावना की सराहना करते हुए उन्हें अपना मंगल आशीर्वाद दिया। अन्त में पू. आचार्य श्री संभवसागर जी प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज को उनके द्वारा दिये गये बहुमान विनय की प्रशंसा करते हुए। ज्ञानवृद्धि एवं संघ वृद्धि का आशीर्वाद दिया। प.पू. गणाचार्य श्री के समस्त संघ एवं उपस्थित सभी को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। त्रियोग आश्रम द्वारा पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के संघस्थ ब्रह्मचारी भैया बहिनों का सम्मान किया गया।

ब्रा.ब्र. प्रदीप जैन, त्रियोग आश्रम

हजारी बाग में हुई भव्य अगवानी-दो आचार्यों का मिलन

२२ जनवरी २०१९ को हजारी बाग झारखण्ड में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ५८ पिच्छी का प्रथम बार विशाल चतुर्विध संघ का नगरागमन हुआ। सकल जैन समाज ने पू. आचार्य श्री शीतल सागर जी महाराज ससंघ के साथ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ की भव्य अगवानी की। दोनों आचार्यों का वात्सल्य पूर्ण मिलन हुआ।

दिनांक २३ जनवरी को क्षेत्रिय सांसद केन्द्रीय मंत्री श्री जयन्त जी सिन्हा पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे जिन्होंने श्रीफल भेंटकर पू. गणाचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त किया।

दिनांक २४ जनवरी को पूर्व सांसद श्री यदुनाथ जी पाण्डे धर्मसभा में पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे जिन्होंने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर तथा पाद प्रक्षालन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। तथा अपनी विनयांजलि अर्पित की।

सुनील जैन, हजारीवाग

झारखण्ड की राजधानी रांची में विशाल चतुर्विध संघ

३० जनवरी २०१९ को झारखण्ड की राजधानी रांची में इतिहास में प्रथमवार प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के ६५ साधुसंत का विशाल चतुर्विध संघ का भव्य आगमन हुआ। जैन समाज रांची ने साधु संतों की भव्य शोभायात्रा के साथ नगर प्रवेश कराया गया। एक ड्रेसकोड़ में महिला मण्डल द्वारा स्थान स्थान पर गणाचार्य

श्री विरागसागर जी महाराज का पाद प्रक्षालन कर आरती उतारी। झारखण्ड अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष श्री अरबिन्द जी सेठी, झामुमो की केन्द्रीय अध्यक्ष डॉ महुआ मांझी, जूनियर चेम्बर के अध्यक्ष सौरभ शाह, जीणमाता प्रचार समिति अग्रवाल समाज, ब्राह्मण समाज, मारवाडी युवा मंच, चेम्बर अध्यक्ष श्री दीपक मारू श्वेताम्बर जैन समाज महेश्वरी समाज के प्रतिनिधियों ने भी जैन समाज के साथ साधुओं अगवानी की। श्री दिग. जैन भवन आयोजित धर्म सभा में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने धर्मोपदेश के साथ सभी को अपना मंगल आशीर्वाद दिया।

संजय छावडा, रांची महामंत्री जैन समाज

प.पू. गणा. श्री विरागसागर जी महाराज के सुशिष्य मुनिश्री विश्वध्येय सागर जी का समाधिमरण

संसार में अनेक जीव जन्म लेते है और अपनी आयु प्रमाण जीवन जीकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं किन्तु कुछ ही ऐसे पुण्यात्मा जीव होते है जो देव दुर्लभ यह मनुष्य पर्याय को पाकर धर्म साधना पूर्वक जीवन जीते हैं और इस साधना रूपी जीवन के शिखर पर सल्लेखना समाधि रूप कलशारोहण कर अपने जीवन को सार्थक बना लेते है। ऐसे ही साधक थे प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के सुशिष्य मुनि श्री विश्वध्येय सागर जी जिन्होंने गृहस्थावस्था में रहकर धर्म साधना के साथ अपना जीवन व्यतीत किया। आप दो बार संरपंच भी रहे एवं गृहस्थावस्था की सभी जिम्मेदारियों से निवृत हो रत्नत्रय की साधना के साथ संल्लेखना समाधि कर अपनी इस पर्याश को सार्थक बना लिया। मुनिश्री विश्वध्येय सागर जी का पूर्वनाम श्री नन्हेलाल जी जैन बरखेडा वल्लारपुर जिला-दमोह निवासी थे। वर्तमान में ९३ वर्ष की आयु थी। अपने भरे पूरे परिवार (धर्म पत्नी श्रीमती रूपरानी, २ पुत्र एवं पुत्रियाँ) का त्याग कर २०१६ में मुनि विप्रण सागर जी से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर क्षुल्लक श्री विश्वध्येय सागर के रूप में धर्म साधना रत हो गये। श्री सम्मेद शिखर जी में आपने प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के चरणों अपना जीवन समर्पित कर दिया। एवं संघस्थ साधुओं के साथ अपनी धर्म साधनारत रहे। दिनांक १८ जनवरी २०१९ को इटखोरी में गिरजाने से चोट आई जिसका उपचार किया गया किन्तु उन्हें शायद अपनी आयु का अन्तिम समय का आभास होने लगा था अत: उन्होंने प.पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री से सल्लेखना समाधि व्रत ग्रहण किया। संघ का विहार रांची की ओर हुआ। ३० जनवरी को प.पू. गणाचार्य श्री संघ का रांची में मंगल प्रवेश हुआ। हजारी वाग में क्षुल्लक श्री विश्वध्येय सागर जी के स्वास्थ्य की विगडती स्थिति देख उन्हें पू. गणाचार्य के पास लाया गया। क्षुल्लक जी पू. गुरु देव से मुनिदीक्षा की प्रार्थना के साथ चारों प्रकार के आहार का त्याग किया। पू. गुरुदेव ने मुनि दीक्षा के संस्कारों के साथ अन्तिम सम्बोधना देते हुए णमोकार मंत्र सुनाया गुरुमुख से णमोकार मंत्र सुनते गुरुचरणों में अपनी अन्तिम श्वांस लेकर मुनिश्री विश्वध्येय सागर जी ने अपनी जीवन की साधना को सार्थक बना लिया।

जीवन परिचय

पूर्व नाम	-	श्री नन्हेलाल जी जैन
निवासी	-	वरखेड़ा वल्लारपुर, जिला-दमोह (म.प्र.)
जन्म/उम्र	-	सन् १९२५ उम्र- ९३ वर्ष
शिक्षा	-	कक्षा ५ वीं
व्यवसाय	-	कृषि एवं साहूकारी
पिता-माता	-	स्व.श्री नाथूराम जी जैन, स्व. श्रीमती राजरानी जैन
परिवार	-	धर्म पत्नी-श्रीमती रूपरानी जैन २ पुत्र- श्री पूरन चन्द्र जी जैन, श्री मुकेश कुमार जैन ६ पुत्री- श्रीमती चन्द्रा जैन, श्रीमती सूरज जैन, श्रीमती माया जैन, श्रीमती लक्ष्मी जैन,

श्रीमती प्रभा जैन, श्रीमती राजकुमार जी जैन

ब्रह्मचर्य	–	१९९३ (मुनि श्री सुज्ञान सागर जी से)
प्रतिमा व्रत	–	३ प्रतिमा १९९५
क्षुल्लक दीक्षा	–	१८.९.२०१६
दीक्षा गुरु	–	मुनि श्री विप्रणसागर जी
नामकरण	–	क्षुल्लक श्री विश्वध्येय सागर जी
संल्लेखना व्रत	–	१८.१.२०१९ इटखोरी (झारखण्ड) प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	३१.१.२०१९ रांची
नाम	–	मुनि श्री विश्वध्येय सागर जी
दीक्षा गुरु	–	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
संल्लेखना समाधि	–	३१.१.२०१९, दोपहर- १ बजे
निर्यापकाचार्य	–	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
सान्निध्य	–	४८ पिच्छी

निहाल छावड़ा, रांची

भक्तामर विधान एवं भगवान श्री आदिनाथ का निर्वाण महोत्सव सम्पन्न

३ फरवरी २०१९ को रांची (झारखण्ड) मं प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ (४८ पिच्छी) के पावन सान्निध्य में भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याण दिवस पर सकल जैन समाज द्वारा श्री भक्तामर विधान का आयोजन कर भगवान श्री आदिनाथ जी का अभिषेक शांतिधारा पूर्वक श्री भक्तामर विधान एवं भगवान का निर्वाण लाडू चढ़ाया। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज सहित १० साधुओं के केशलोंच भी सम्पन्न हुए। इस अवसर पूज्य गणाचार्य श्री ने सभी को धर्मोपदेश के साथ अपना मंगल आशीष प्रदान किया।

श्री दिगम्बर जैन समाज द्वारा प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के सुशिष्य समाधिस्थ मुनिश्री विश्वध्येय सागर जी महाराज की चरण छत्री बनाने हेतु मंदिर परिसर शिलान्यास सम्पन्न किया गया।

सानू जैन, रांची

रांची में अहिंसा विश्वमैत्री कीर्ति स्तंभ स्थापित होगा

६ फरवरी २०१९ को श्री वासुपूज्य मंदिर रांची के प्रागण में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्यश्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ (४८ पिच्छी) के पावन सान्निध्य में धर्म सभा का आयोजन किया गया। जिसके जैन जैनेतर समाज के साथ डी.ए.व्ही. पब्लिक स्कूल के ५०० से अधिक छात्र-छात्राएँ उपस्थित हुए । श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माताजी आदि माताजियों द्वारा मंगल चरण किया गया। स्वागतगान श्री हेमन्त जी सेठी द्वारा किया गया। श्री संजय जी सेठ अध्यक्ष खादी बोर्ड झारखण्ड, श्री एस.के सिन्हा जी डायरेक्टर डी.ए.व्ही. पब्लिक स्कूल, श्री एस.के. सिन्हा प्रिन्सीपल डी.ए.व्ही. पब्लिक स्कूल, श्रीमती आशा लकडा मेयर रांची श्री संजीव जी वर्की डिप्टी मेयर रांची आदि गणमान्य नागरिकों ने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी ने पूज्य गुरुदेव श्री के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने अपने अमृतमयी धर्मोपदेश के साथ अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता अभियान के सूत्र जानकर किसी जीव को नहीं मारेंगे, शराब नहीं पियेगे, अण्डा मांस मछली का सेवन नहीं करेंगे। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ वेटा भी पढ़ाओ और संस्कार वान बनाओ अर्थात् भ्रूण हत्या नहीं करेगे। अपने घर मोहल्ला ग्राम नगर को स्वच्छता बनाये रखेंगे का ऊँ कार ध्वनि के साथ सभी ने दोनों हाथ उठाकर संकल्प लिया। इस अवसर पर रांची मेयर श्रीमती आशा जी लकड़ा ने पू. गुरुदेव को अपनी विनयांजलि अर्पित

करते हुए रांची नगर में अहिंसा विश्वमैत्री कीर्ति स्तंभ की स्थापना करने की घोषणा की। अन्त में आयोजन कमेटी द्वारा सभी का आभार माना।

संजय छावडा, महामंत्री जैन समाज

बुन्डू में छात्र छात्राओं को मिला आशीर्वाद

९ फरवरी २०१९ को बुण्डू (झारखण्ड) के साउथ पॉइन्ट पब्लिक स्कूल के ५०० छात्र-छात्राओं तथा ग्राम वासियों को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने अपनी अमृतमयी वाणी से उद्बोधन देते हुए कहा कि छात्रों को शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा एवं अच्छे संस्कारों की आवश्यकता है। देश में सुख शांति समृद्धि के लिये अहिंसा, व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता अभियान के ५ सूत्र जानकर किसी जीव को नहीं मारेंगे, अण्डा मांस मछली नहीं खायेंगे और शराब का सेवन नहीं करेगे। भ्रूण हत्या न करेंगे न करने की सलाह देगे। घर मोहल्लो ग्राम नगर को साफ बनाये रखेंगे का संकल्प सभी के दोनों हाथ उठवा कर कराया तथा सभी को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

इस अवसर पर श्रमणी आर्यिका विसंयोजना श्री माता जी, आ. विदितश्री माता जी, आ. विकुन्दन श्री माताजी द्वारा मंगलाचरण किया गया। श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी द्वारा भी उद्बोधन दिया गया। स्कूल के प्राचार्य एवं शिक्षकगणों ने पू. गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया। अन्त में विद्यालय परिवार ने सभी का आभार प्रदर्शन किया।

शुभम जैन

देवलटांड में सराक समाज का सम्मेलन सम्पन्न

१० फरवरी २०१९ को देवलटांड में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ ४८ पिच्छी के पावन सान्निध्य में झारखण्ड पश्चिम बंगाल उडीसा के सराक जैन समाज का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में चित्र अनावरण श्री कमल कुमार पाटनी, श्री कैलाशचन्द्र जी बुन्डू, श्री अरूण कुमार जी, श्री भुवनेशजी आदि द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन श्री प्रफुल्ल जी मांझी संदपी मांणी सुमेर जी रतनलाल जी सुरेन्द्र जी किरीट मांझी द्वारा किया गया। मंगलाचरण देवलटांड भजन मण्डली द्वारा किया गया। झारखण्ड पंश्चिम बंगाल उडीसा पुरुलिया आदि अनेक स्थानों से आये सराक जैन बन्धुओं ने प.पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। आयोजन समिति द्वारा सराक समाज के प्रमुख समाज श्रेष्ठियों का सम्मान किया। आयोजन समिति द्वारा सराक समाज के प्रमुख समाज श्रेष्ठियों का सम्मान किया। प.पू. गणाचार्य श्री का पाद प्रक्षालन श्री रमेशजी दयानन्द जी प्रफुल्ल जी भुवनेश जी, जीतेन्द्र जी, इन्द्रजीत जी द्वारा किया गया।

श्री रमेश जी द्वारा सराक समाज के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डाला गया तथा वर्तमान में सराक जैन समाज के उत्थान के प्रयास करने वाले श्री बाबूलाल जी जमादार एवं अन्य समाज श्रेष्ठियों के कार्य की सराहना की जिन्होंने समाज को धर्म के संस्कारों से सीचने तथा जागरूकता के प्रयास किये। श्री कमल कुमार जी ने वर्तमान में सराक समाज के विकास के लिये किये जा रहे कार्यों की जानकारी देते हुए अनेक समस्याओं के समाधान हेतु प.पू. गणाचार्य श्री से मार्गदर्शन हेतु प्रार्थना की। सम्मेलन में श्रमणी आर्यिका विसंयोजना श्री माता जी, श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माताजी एवं मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज का भी उद्बोधन प्राप्त हुआ। प.पू. गणाचार्य श्री जी अपने मंगलमयी उद्बोधन में कहा कि जिस प्रकार किसी राज्य का राजा न हो तो वह राज्य नहीं चल सकता। उसी प्रकार जिस समाज में गुरु न हो तो वह समाज नहीं चल पाता। सराक समाज में पीढ़ियों से रात्रि भोजन न करने छानकर पानी पीने, आलू प्याज न खाने, शराब मांस अण्डे आदि का सेवन न करने, समाज से वाहर अपने बच्चो की शादियाँ न करने के, समाज के गोत्र तीर्थ करो के नाम के आदि संस्कारों पालन करता आ रहा है। प्राचीन जैन मंदिर व मूर्तियाँ इस बात का प्रमाण है कि सराक समाज जैन धर्मावलम्बी है गुरुओं के अभाव में धर्म से न जुड़ने के कारण समाज का विकास नहीं हो सका। मनुष्य पुरुषार्थ करे तो क्या नहीं कर सकता, पुरुषार्थ से सब प्राप्त किया जा सकता है। पू. आचार्य विमल सागर जी महाराज ने सराक समाज को जैन माना था तथा उन्हें नित्य अभिषेक पूजन हेतु एक पीतल की प्रतिष्ठित मूर्ति अभिषक हेतु भेंट की थी। देवलगांव का नाम भी भगवान ऋषभदेव के नाम से नाम पड़ा। प.पू.

गणाचार्य श्री जी ने उपस्थित समस्त ग्रामीण जन एवं समस्त समाज को अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता अभियान के ५ सूत्रों का दोनों हाथ उठवाकर संकल्प कराते हुए अपना मंगल आशीर्वाद दिया।

गौरांग जैन, देवलटांड

छात्र-छात्राओं एवं ग्रामीणजनों को मिला आशीर्वाद

११ फरवरी २०१९ को देवल टांड के उत्क्रमिक उच्च विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं ग्राम वासियों को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने अपने मंगलमयी उद्‌बोधन में कहा कि बच्चों को शिक्षा के साथ अच्छे संस्कारों की आवश्यकता हैं संस्कार देने में माँ की अहम भूमिका होती है जो संस्कार एक अच्छी माँ दे सकती है वह संस्कार सौ शिक्षक मिलकर भी नहीं दे सकते। अत: माता-पिता अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें तथा उन्हें उच्च स्तर की पढ़ाई कराये, आज गरीबों की मुख्य कारण शिक्षा की कमी हैं। शिक्षा एवं संस्कारों से जीवन उन्नतशील बनता है। मुनिश्री विश्वलोचन सागर जी एवं मुनिश्री विश्वदक्ष सागर जी महाराज के केशलोंच हुए जिसके माध्यम से पू. गुरुदेव ने उपस्थित जन समुदाय को दिगम्बर जैन संतों की चर्या से एवं साधना से अवगत कराया। इस अवसर पर ए.एस.आई श्री चौथाउराव एवं ए.एस.आई श्री सुरेन्द्र जी पू. गुरुदेव के दर्शनार्थ पधारे। पू. गुरुदेव ने सभी को अपना मंगल आशीर्वाद दिया।

रमेश जैन, नौवाडी

पूर्वजों की धरोहर एवं संस्कारों को बनाये रखें

११ फरवरी २०१९ को प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अपने विशाल संघ के साथ ग्राम नौवाडी जैन मंदिर दर्शनार्थ पधारे जहाँ उपस्थित ग्रामीण एवं सराक जैन समाज को संबोधित करते हुए। प.पू. गरुदेव ने कहा कि धर्मपालन करने से ही सुख प्राप्त होता है। यहाँ की सराक जैन समाज प्राचीन काल से रहने वाली समाज है मंदिर मूर्तियां इसका प्रमाण है। अपने पूर्वजों की धरोहर एवं संस्कारों को बनाये रखें। नगर नगर में सबको प्रेम व्यवहार से जोड़कर रखें। सभी समाज बन्धु अपने नाम के साथ जैन शब्द अवश्य लिखें। अपने बच्चों को धर्म के अच्छे संस्कार अवश्य दें। पू. गुरुदेव ने सभी ग्रामीण एवं समाज को अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता के ५ सूत्रों का दोनों हाथ उठाकर संकल्प कराते हुए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

वछड़े पर वर्षो करूणा

१३ फरवरी को उदयगिरि खण्डगिरि की ओर विहार करते हुए प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का काण्ड्रा पहुँचने से पूर्व हाईवे पर सड़क के किनारे एक मरणासन्न स्थिति में पड़े गाय के वछड़े को देख पू. गुरुदेव ने उसे गड्ढे से वाहर निकलवा कर उसे अपने कमण्डल का पानी पिलाया एवं शान्तिमंत्र के साथ णमोकार मंत्र सुनाया जिसके प्रभाव से वह मरणासन्न बछड़ा उठकर खड़ा हो गया। यह दृश्य देख हाईवे पर एकत्रित जनता ने पू. गुरुदेव के जयकार के नारे लगाये। पू. गुरुदेव ने सभी को आशीर्वाद दे आगे की ओर विहार किया।

अमित जैन

उडीसा प्रान्त में मंगल प्रवेश

१८ फरवरी २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का उडीसा प्रान्त के सिद्ध क्षेत्र उदयगिरि खण्डगिरि की तीर्थ वंदना हेतु झारखण्ड की सीमा से उड़ीसा के चम्पुआ से उड़ीसा प्रान्त की सीमा में उडीसा जैन समाज ने प.पू. गणाचार्य श्री पादप्रक्षालन कर भव्य अगवानी के साथ मंगल प्रवेश कराया। इस अवसर उडीसा के केन्दुझर जिले की सब कलेक्टर सुश्री पारूल जैन एवं बी.डी.ओ. सुश्री नूपर जैन प.पू. गणाचार्य श्री अगवानी में सम्मलित हुई। दर्शन कर आशीर्वाद लिया। कटक, भुवनेश्वर, जाजपुर, केन्दुझर भिण्ड रांची कोडरमा देवलटांड नौवाडी आदि अनेक स्थानों से श्रद्धालुगण अगवानी में उपस्थित रहे।

विराग वर्ग पहेली 39

उदाहरण – र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे–विराग

मे	रे	म	थी	न	सा	थि	या
आ	वी	हा	णा	के	ता	रे	ह
प	छु	ल	रा	गु	रू	व	का
ना	म	क	ल्प	वृ	क्ष	ज्ञ	ल
ली	ब	पु	का	रे	मैं	द	म
छ	ने	गु	बं	रू	से	ण्ड	क
म	ल	गा	द	ली	ल	ग्न	ल
सो	ना	हि	र	ण	खो	ना	ला

विराग वर्ग पहेली 38 के उत्तर

(1) कल्याण मंदिर
(2) जिनचंतुर्विंशति
(3) सुप्रभात
(4) महावीराष्टक
(5) भक्तामर
(6) गोम्टेश
(7) सरस्वती
(8) विषापाहार
(9) वीतराग
(10) एकीभाव

नोट– (1) इसमें आपको कोई १० त्यौहार के नाम दिये है। आपको खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....